पंद्रहवां अंक

# आश्रम-भारती

2022-23

## केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, अहमदाबाद दक्षिण

भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

# 'रश्मिरथी'

## प्रथम सर्ग

ऊँच-नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,
दया-धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है।
क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,
सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें तप-त्याग।

तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतला के,
पाते हैं जग में प्रशस्ति अपना करतब दिखला के।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक,
वीर खींच कर ही रहते हैं इतिहासों में लीक।

# आश्रम-भारती

## विभागीय हिन्दी पत्रिका

■ मुख्य संरक्षक ■
**श्री विवेक रंजन**
प्रधान मुख्य आयुक्त,
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर, अहमदाबाद क्षेत्र

■ प्रधान संपादक ■
**श्री उपेन्द्र सिंह यादव**
आयुक्त,
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर, अहमदाबाद दक्षिण

■ संपादक ■
**श्रीमती अनुपमा मुन्जाल**
सहायक निदेशक (राजभाषा)
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर, अहमदाबाद-दक्षिण

■ सहयोगी ■
**श्री सौरभ भारद्वाज**
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

■ प्रकाशक कार्यालय ■
**केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, अहमदाबाद-दक्षिण**
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर भवन, राजस्व मार्ग, आंबावाड़ी, अहमदाबाद-380015

पत्रिका का कवर फोटो दिनांक 02-04-2022 को अहमदाबाद स्थित कोचरब आश्रम से लेकर साबरमती आश्रम तक नराकास, अहमदाबाद स्तर पर आयोजित पदयात्रा का चित्र

**पत्रिका का पिछला आवरण और 'माँ का जहाँ' कविता का चित्र**
**सुश्री मानसी खिंवसरा, आशुलिपिक द्वारा**

इस पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं। प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से संपादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। संपादक समिति यह भी दावा नहीं करती कि पत्रिका में प्रकाशित लेख/रचनाएँ रचनाकारों की मूल रचनाएँ हैं।

# राजभाषा नियम 1976

## हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, तथा - क, ख, ग में परिभाषित किया गया है।

| भाषा क्षेत्र | राज्य/संघ राज्य |
|---|---|
| 'क' | बिहार हरियाणा हिमाचल प्रदेश मध्य प्रदेश छत्तीसगढ झारखंड उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह दिल्ली संघ राज्य हैं। |
| 'ख' | गुजरात महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़ दमन एवं दीव तथा दादरा एवं नगर हवेली संघ राज्य |
| 'ग' | उपरोक्त निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य |

# बधाई

प्रिय पाठकों,

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि केन्द्रीय माल और सेवाकर, अहमदाबाद दक्षिण आयुक्तालय अपनी विभागीय हिंदी पत्रिका ''आश्रम भारती'' का पंद्रहवां अंक प्रकाशित कर रहा है। यह एक सराहनीय कार्य है।

''आश्रम भारती'' का नवीन अंक प्रकाशित करने के लिए आयुक्त, केन्द्रीय माल और सेवाकर, अहमदाबाद दक्षिण को बधाई देता हूँ। गृह पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों का ज्ञानवर्धन होगा। पत्रिका के ज़रिए परिवारजनों की रचनात्मक क्षमता को प्रोत्साहन एवं कार्यालय की प्रतिभाओं को सामने आने का एक मंच भी प्राप्त होता है, जो कि अति श्रेष्ठ है।

भारत का विकास हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के अधिक से अधिक प्रयोग करने और उसे सही मायने में स्वीकार करने से ही संभव है। निस्संदेह यह पत्रिका हिन्दी भाषा के प्रयोग हेतु प्रेरणादायक सिद्ध होगी तथा कार्यालय में हिंदी में कार्य करने का संबल प्रदान करेगी।

राजभाषा हिंदी का प्रचार एवं संवर्धन हम सब का संवैधानिक दायित्व है और इस दायित्व की पूर्ति की दिशा में ''आश्रम भारती'' के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादक मण्डल एवं रचनात्मक सहयोग देने वाले समस्त अधिकारियों को विशेष बधाई देता हूँ।

**( विवेक रंजन )**
प्रधान मुख्य आयुक्त

# प्रधान संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

मुझे आयुक्तालय की हिंदी पत्रिका ''आश्रम भारती'' का पंद्रहवां अंक आपको सौंपते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आप सभी भली-भांति परिचित हैं कि हिन्दी कहीं सरकारी कामकाज के रूप में, कहीं संपर्क सूत्र के रूप में बांधने में, कहीं सामाजिक सामंजस्य के त्यौहार के रूप में, तो कहीं भक्तिभाव में विभोर संपूर्ण विश्व में व्याप्त है। हमारी गृह पत्रिका ''आश्रम भारती'' का यह अंक हिंदी के प्रचार एवं प्रसार का एक और प्रयास है।

इस सुअवसर पर मैं आयुक्तालय के सभी अधिकारीगण और सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ, जो इस वैश्विक महामारी, कोरोना काल के दौरान भी सरकारी कामकाज में अपना पूरा योगदान देते आ रहे हैं और अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं।

कोविड-19 के कारण पूरा विश्व अजीब से दौर से गुज़रा है। आइए! हम सब अपने जीवन को और अधिक सार्थक व स्वस्थ बनाने के लिए अपने आप से वादा करें। धैर्य और सुरक्षा के साथ जीवन की हर परिस्थितियों का सामना करते रहें। मैं यह आशा करता हूँ कि भविष्य में और भी अधिकारी/कर्मचारी सक्रिय रूप से भागीदार बनेंगे।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका हिन्दी अमृतधारा को प्रबल प्रवाह बनाने में अवश्य सहायक सिद्ध होगी। हिंदी पत्रिका ''आश्रम भारती'' के प्रकाशन के लिए मैं राजभाषा अनुभाग को तथा आयुक्तालय के समस्त कर्मियों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

**( उपेन्द्र सिंह यादव )**
आयुक्त

# संदेश

केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, अहमदाबाद-दक्षिण को ''आश्रम भारती'' पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी विश्व की एक प्राचीन तथा महान भाषा होने के साथ ही हमारी राजभाषा भी है। चीनी भाषा के बाद हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी आम जन की भाषा है और सभी कल्याणकारी योजनाएँ तभी प्रभावी बन सकेंगी, जब उनकी जानकारी आम जन की भाषा में उन तक पहुँचेंगी।

हमारे लिए अपने मूल कामकाज के साथ-साथ संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन भी आवश्यक है। इस विषय में मेरा विचार है कि हम हिंदी के सरल रूप को अपनाकर उसके प्रयोग को प्राथमिकता दें। इस प्रयास में विभागीय पत्रिकाएं एक अहम भूमिका निभाती हैं। मैं आशा करता हूँ कि सरल हिंदी का प्रयोग करते हुए सभी अधिकारीगण अपना अधिक से अधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित होंगे।

आयुक्तालय के रचनाकार तथा पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन कार्य में जुड़े अधिकारी प्रशंसा के पात्र हैं।

अमित

**( अमित कुमार मिश्रा )**
अपर आयुक्त

# संदेश

हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन से अधिकारियों तथा कर्मचारियों में हिंदी लिखने के लिए उनका लगाव नज़र आता है। गृह पत्रिकाएँ जहाँ भाषा के विकास में अपना योगदान देती हैं, वहीं राजभाषा के विकास में भी इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

हिन्दी कभी भी किसी भाषा की प्रतिद्वंद्वी नहीं रही है। यह तो भारत के जन-गण की भाषा है, जो हमारे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का माध्यम है। यह एक सरल भाषा एवं प्रेम की भाषा है। मुझे यकीन है कि यह पत्रिका हिंदी के उपयोग में निश्चित रूप से सफल होगी।

आइए! हम सभी अपना दैनिक सरकारी कामकाज अधिक से अधिक राजभाषा में करने का संकल्प लें।

पत्रिका में योगदान देने वाले आयुक्तालय के लेखकों, कवियों, कलाकारों तथा राजभाषा अनुभाग का यह प्रयास निश्चित रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारीगण को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

**( टी. जी. राठोड )**
अपर आयुक्त

# संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, अहमदाबाद दक्षिण द्वारा वर्ष 2022-23 हेतु राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। ''हिन्दी'' भारतीय संस्कृति की आत्मा है और अभिव्यक्ति का सबसे प्रभावी माध्यम है, इसके अतिरिक्त यह दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है। राजभाषा हिन्दी का सरकारी कामकाज में अधिकाधिक प्रयोग हो सके, इस दिशा में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन एक गंभीर प्रयास है।

पत्रिका में रचनाएँ देने वाले राजस्व संग्रह में तल्लीन अधिकारी / कर्मचारी भी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के माध्यम से मेरी सभी से अपील है कि हिन्दी के प्रचार - प्रसार एवं हिन्दी की अन्य गतिविधियों में पूरे मनोयोग से सक्रिय योगदान प्रदान करें।

मैं केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर, अहमदावाद - दक्षिण के समस्त अधिकारीगण को रचनात्मक अभिव्यक्ति हेतु मंच प्रदान करने के इस प्रयास के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ। सबका धन्यवाद एवं साधुवाद।

मारुत त्रिपाठी

**( मारुत त्रिपाठी )**
अपर आयुक्त

# संदेश

भाषा के प्रचार प्रसार हेतु किए जाने वाले रचनात्मक कार्यों में पत्रिका की अपनी उत्कृष्ट भूमिका होती है।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र की उपर्युक्त पंक्तियों की भावना के अनुरूप ही संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राजभाषा स्वीकृत किया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी हिंदी को ह्रदय की भाषा और हिंदी के प्रयोग को स्वराज से जोड़ते हुए कहते है - अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता-समझता है। और हिन्दी इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार देवनागरी लिपि विश्व की सबसे वैज्ञानिक लिपि है।

पत्रिका की रचनाओं की विविधता, मौलिकता व रचनात्मकता के लिए रचनाकार प्रशंसा के पात्र हैं। यह पत्रिका न केवल हमारी साहित्यिक प्रवृत्तियों को प्रेरित करेगी वरन हमें राजभाषा के संवैधानिक और विधिक उपबंधों के बारे में भी ज्ञानवर्द्धन करेगी।

शुभकामनाओं सहित!

**( श्रवण राम )**
संयुक्त आयुक्त

# सम्पादकीय

हमारे आयुक्तालय की राजभाषा पत्रिका 'आश्रम भारती' का यह अंक आपको समर्पित करते हुए अपार हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है।

पत्रिका समसामयिक समाज, परिवार, संगठन अथवा कार्यालय के लिए बौद्धिक अभिव्यक्ति का एक दर्पण जैसा है। राजभाषा पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को नई दिशा मिलती है। राजभाषा पत्रिका 'आश्रम भारती' के इस अंक में आयुक्तालय के अधिकारीगण की सृजनशील रचनात्मकता दृष्टिगोचर होती है। पत्रिका में आयुक्तालय के शीर्ष अधिकारियों के सुंदर संदेश समाहित हैं। साहित्यिक तथा समसामयिक विषयों पर संस्मरण, कहानियाँ, लेख व कविताओं तथा सुंदर चित्रों का अच्छा संकलन है। विशेष रूप से दो यात्रा वृत्तांतों का विशेष उल्लेख करना चाहूँगी, इनको पढ़कर वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि हम उन स्थानों को व्यक्तिगत रूप से अनुभव कर रहे हों। वहीं पत्रिका में मंत्रमुग्ध करनेवाली हस्त रचित चित्रकला का सुंदर प्रदर्शन किया गया है।

सूचना प्रौद्योगिकी और वैश्विकरण के इस दौर में भाषा, साहित्य और संस्कृति का महत्त्व और अधिक बढ़ गया है। आज के दौर में इंटरनेट पर सभी तरह की महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ व सूचनाएँ उपलब्ध हैं। अतः इनका प्रयोग करके हिन्दी को पूर्णतया कार्यरूप में लेने का प्रयास बहुत ही सरलता से किया जा सकता है।

राजभाषा पत्रिका 'आश्रम भारती' का यह अंक आपको कैसा लगा? कृपया अपने सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ अवश्य भेजें ताकि आगे उसी अनुरूप सुधार करके इसे और बेहतर किए जाने के लिए प्रयास किए जाएँ। मैं सभी रचनाकारों को अपनी हार्दिक बधाईयां देती हूँ। भविष्य में भी आप सभी से रचनाओं, संस्मरणों, विभाग से जुड़े लेखों, चित्रों, कविताओं आदि के उत्साहित योगदान के लिए विशेष आग्रह करती हूँ। मेरी कामना है कि हर साल इस पत्रिका को हर्ष और उल्लास के साथ प्रकाशित करें।

अनुपमा मुन्जाल

**( अनुपमा मुन्जाल )**
सहायक निदेशक (राजभाषा)

# भारत के संविधान में राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधान

**भूमिका:**

हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में 14 सितंबर सन् 1949 को स्वीकार किया गया। इसके बाद संविधान में राजभाषा के संबंध में धारा 343 से 351 तक की व्यवस्था की गयी। इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिए 14 सितंबर का दिन प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

धारा 343(1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त अंको का रूप भारतीय अंको का अंतरर्राष्ट्रीय स्वरूप (अर्थात 1, 2, 3 आदि) होगा। संसद का कार्य हिंदी में या अंग्रेज़ी में किया जा सकता है। परंतु राज्यसभा के सभापति महोदय या लोकसभा के अध्यक्ष महोदय विशेष परिस्थिति में सदन के किसी सदस्य को अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकते हैं। (संविधान के अनुच्छेद 120) किन प्रयोजनों के लिए केवल हिंदी का प्रयोग किया जाना है, किन के लिए हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं का प्रयोग आवश्यक है और किन कार्यों के लिए अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग किया जाना है, यह राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 और उनके अंतर्गत समय-समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से जारी किए गए निर्देशों द्वारा निर्धारित किया गया है।

**अध्याय 1 : संघ की भाषा**

**संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा (अनुच्छेद 120)**

(1) भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किन्तु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेज़ी में किया जाएगा।

परंतु यथास्थिति, राज्य सभा का सभापति या लोक सभा का अध्यक्ष अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो हिंदी में या अंग्रेज़ी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।

(2) जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो ''या अंग्रेजी में'' शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो।

**विधान-मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा (अनुच्छेद 210)**

(1) भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किन्तु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, राज्य के विधान-मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेज़ी में किया जाएगा।

परंतु यथास्थिति, विधान सभा का अध्यक्ष या विधान परिषद् का सभापति अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो पूर्वोक्त भाषाओं में से किसी भाषा में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करन की अनुज्ञा दे सकेगा।

(2) जब तक राज्य का विधान-मंडल विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो ''या अंग्रेजी में'' शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो।

परंतु हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में, यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले ''पंद्रह वर्ष'' शब्दों के स्थान पर ''पच्चीस वर्ष'' शब्द रख दिए गए हों।

परंतु यह और कि अरूणाचल प्रदेश, गोवा और मिज़ोरम

राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले ''पंद्रह वर्ष'' शब्दों के स्थान पर ''चालीस वर्ष'' शब्द रख दिए गए हों।

**संघ की राजभाषा (अनुच्छेद 343)**

(1) संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

(2) खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।

परंतु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

(3) इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पंद्रह वर्ष की अवधि के पश्चात्, विधि द्वारा

(क) अंग्रेज़ी भाषा का या

(ख) अंकों के देवनागरी रूप का

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

**राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति (अनुच्छेद 344)**

(1) राष्ट्रपति इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात् ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जाएगी।

(2) आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को-

(क) संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग,

(ख) संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेज़ी भाषा के प्रयोग पर निर्बंधनों,

(ग) अनुच्छेद 348 में उल्लेखित सभी या किन्हीं प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा,

(घ) संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों के रूप,

(ङ) संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा और उनके प्रयोग के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा आयोग को निर्देशित किए गए किसी अन्य विषय के बारे में सिफारिश करें।

(3) खंड (2) के अधीन अपनी सिफारिशें करने में, आयोग भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोक सेवाओं के संबंध में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा।

(4) एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों और राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

(5) समिति का यह कर्तव्य होगा कि वह खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करें और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।

(6) अनुच्छेद 343 में किसी बात के होते हुए भी, राष्ट्रपति खंड (5) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात् उस संपूर्ण प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निर्देश दे सकेगा।

**अध्याय 2 : प्रादेशिक भाषाएं**

**राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं (अनुच्छेद 345)**

अनुच्छेद 346 और अनुच्छेद 347 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, किसी राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगा :

परंतु जब तक राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, अन्यथा उपबंध न करे तब तक राज्य के भीतर उन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका इस संविधान के प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।

**एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा (अनुच्छेद 346)**

संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी :

परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

**किसी भी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध (अनुच्छेद 347)**

यदि इस निमित्त मांग किए जाने पर राष्ट्रपति को यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि इसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निर्देश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए, जो वह विनिर्दिष्ट करे, शासकीय मान्यता दी जाए।

**अध्याय 3 : उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा**

**उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा (अनुच्छेद 348)**

(1) इस भाग के पूर्वगामी उपबंधो में किसी बात के होते हुए भी, जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक-

(क) उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेज़ी भाषा में होंगी,

(ख) (i) संसद के प्रत्येक सदन या किसी राज्य के विधान-मंडल के सदन या प्रत्येक सदन में पुनःस्थापित किए जाने वाले सभी विधेयकों या प्रस्तावित किए जाने वाले उनके संशोधनों के,

(ii) संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा पारित सभी अधिनियमों के और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के, और

(iii) इस संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा बनाई गई किसी विधि के अधीन निकाले गए या बनाए गए सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपविधियों के, प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे।

(2) खंड (1) के उपखंड (क) में किसी बात के होते हुए भी, किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में, जिसका मुख्य स्थान उस राज्य में है, हिंदी भाषा का

या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा :

परंतु इस खंड की कोई बात ऐसे उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश को लागू नहीं होगी।

(3) खंड (1) के उपखंड (ख) में किसी बात के होते हुए भी, जहां किसी राज्य के विधान-मंडल ने, उस विधान-मंडल में पुनःस्थापित विधेयकों या उसके द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में अथवा उस उपखंड के पैरा (iv) में निर्दिष्ट किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेज़ी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

**भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया (अनुच्छेद 349)**

इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि के दौरान, अनुच्छेद 348 के खंड (1) में उल्लेखित किसी प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के लिए उपबंध करने वाला कोई विधेयक या संशोधन संसद के किसी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना पुनःस्थापित या प्रस्तावित नहीं किया जाएगा और राष्ट्रपति किसी ऐसे विधेयक को पुनःस्थापित या किसी ऐसे संशोधन को प्रस्तावित किए जाने की मंजूरी अनुच्छेद 344 के खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों पर और उस अनुच्छेद के खंड (4) के अधीन गठित समिति के प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात् ही देगा, अन्यथा नहीं।

**अध्याय 4 : विशेष निर्देश**

व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा (अनुच्छेद 350)

प्रत्येक व्यक्ति किसी व्यथा के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने का हकदार होगा।

**क. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं (अनुच्छेद 350)**

प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निर्देश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।

**ख. भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकारी (अनुच्छेद 350)**

(1) भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए यह विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति नियुक्त करेगा।

(2) विशेष अधिकारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के लिए उपबंधित रक्षोपायों से संबंधित सभी विषयों का अन्वेषण करें और उन विषयों के संबंध में ऐसे अंतरालों पर जो राष्ट्रपति निर्दिष्ट करे,-

राष्ट्रपति को प्रतिवेदन दे और राष्ट्रपति ऐसे सभी प्रतिवेदनों को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और संबंधित राज्यों की सरकारों को भिजवाएगा।

**हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश (अनुच्छेद 351)**

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामसिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

# अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था : जीएसटी

जीएसटी भारत में लागू एक अहम अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था है, जिसे 1 जुलाई 2017 को लागू किया गया था। इस कर व्यवस्था में केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा अलग अलग दरों पर लगाए जाने वाले तमाम करों को हटाकर पूरे देश के लिए एक ही अप्रत्यक्ष कर प्रणाली लागू की गई है। भारतीय संविधान में इस कर व्यवस्था को लागू करने के लिए 101वां संशोधन किया गया था। सरकार व कई अर्थशास्त्रियों ने इसे आज़ादी के बाद सबसे बड़ा आर्थिक सुधार बताया है।

**क्या लाभ हैं जीएसटी लागू करने के ?**

1. जीएसटी पूरी तरह कंप्यूटर आधारित व्यवस्था के जरिए लागू किया जाता है जिससे आसान अनुपालन और पारदर्शिता को बढ़ावा मिलता है।
2. करों पर कराधान (कैसकेडिंग इफेक्ट) की समाप्ति।
3. कर दरों और संरचनाओं की एकरूपता।

**क्या चुनौतियाँ हैं मौजूदा जीएसटी व्यवस्था में ?**

1. जीएसटी के डिजाइन को लेकर आज भी सवाल उठते रहते हैं। जहां कुछउत्पादों पर जीएसटी का रेट शून्य फ़ीसदी है, तो वहां कुछ उत्पादों पर 28 फ़ीसदी। हालांकि GST परिषद लगातार वर्तमान कर दरों को तर्कसंगत बनाने की दिशा में काम कर रही है।
2. जीएसटी की फाइलिंग प्रक्रिया में लगातार सुधार जारी है ।

**आगे क्या किया जाना चाहिए ?**

1. रिटर्न फाइल करने की प्रक्रिया को आसान बनाया जाना चाहिए। ग़ौरतलब है कि कुल करदाता आधार में छोटे कारोबारियों की तादाद सबसे ज्यादा है। इस लिहाज से सरलीकरण बहुत जरूरी है।
2. साथ ही, जीएसटी काउंसिल को इनवॉइस मैचिंग और समय पर इनपुट टैक्स क्रेडिट से जुड़े नियमों को भी सरल बनाना चाहिए। इससे टैक्स कंप्लायंस आसान होगा, लिहाज़ा रिटर्न फाइल करने वाले कारोबारियों की संख्या बढ़ेगी। इस तरह सरकार के राजस्व में वृद्धि होगी।

जीएसटी लागू होने के बाद जैसे-जैसे हम लोग इस दिशा में प्रगति करते गए जीएसटी की राह में आने वाली चुनौतियां भी उजागर होती गईं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार द्वारा तमाम कदम भी उठाए गए। और इसीका नतीजा रहा कि देश में जीएसटी (GST) कानून लागू होने के बाद से अप्रैल 2022 में सरकार द्वारा सबसे ज्यादा टैक्स कलेक्शन किया है।

**- अमित प्रताप**
निरीक्षक

# करारोपण की प्रक्रिया : जीएसटी

- पुरातन काल से ही करारोपण की प्रक्रिया चली आ रही है और यह संभवतः हरेक सभ्यता व प्रत्येक देश में किसी न किसी रूप में प्रचलन में रही है। शासन सबंधित सभी क्रियाकलापों के संचालन हेतु मुद्रा की आवश्यकता होती है और कर संचय ही इसका एकमात्र विकल्प है।
- एक सफल करारोपण पद्धति में मुद्रा का इस विधि से प्रयोग किया जाना चाहिए जिसमें जनता को वहन करने में कोई कठिनाई न हो तथा कर के भुगतान में कम से कम औपचारिकताओं का पालन करना पड़ें।
- आधुनिक भारत के इतिहास पर हम यदि एक नजर डालें तो हम पायेंगे कि कस्टम, एक्साइज तथा सेल्स टैक्स जैसे कई अप्रत्यक्ष कर भारत की आज़ादी के पूर्व से ही चले आ रहे थे। एक अन्य कर, सर्विस टैक्स, वित्त कानून, 1994 के तहत वर्ष 1994 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह द्वारा लाया गया था, काफी सफल रहा। सर्विस टैक्स के आरोपन के उपरांत GDP (सकल घरेलु उत्पाद) में काफी उत्तरोत्तर विकास हुआ।
- क्रमिक विकास के अंतर्गत सभी अप्रत्यक्ष करों को समाहित करके भारत में एक नया कर GST (Goods & Service Tax) 1 जुलाई 2017 से लागु कर दिया गया है। ऐसा नही है कि GST नाम का यह टैक्स लागु करने वाला भारत पहला राष्ट्र है। फ्रांस में सर्वप्रथम 1954 में GST को लागु किया गया है। आज विश्व के करीब 150 से अधिक राष्ट्रों में इसे लागु किया गया है।
- तत्कालीन वित्त मंत्री श्री पी. चिदंबरम ने वर्ष 2006-07 के बजट में GST को लागु करने का दिशा निर्देश जारी कर वर्ष 2010 में GST को लागु करने का निर्णय लिया था, किंतु यह संभव नही हो सका। कालान्तर में जीएसटी को लागु करने हेतु एक सशक्त समिति का गठन किया गया जिसने GST की पहली रिपोर्ट वर्ष 2009 में बनाई, यहीं से GST के कई कानून धीरे-धीरे बनाये गये तथा अंततः 1 जुलाई 2017 को संविधान के 122वें संशाधन के तहत पूरे भारत वर्ष में लागु कर दिया गया। इसे भारत में टैक्स सुधारों को लेकर आजादी के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।
- GST के लागु होने के पश्चात भारत एक Single टैक्स वाली अर्थव्यवस्था बन गया है तथा देश में वस्तुओं और सेवाओं पर लगने वाले अलग-अलग टैक्स ख़त्म हो चुके हैं तथा देश के करीब करीब 130 करोड़ लोग सिर्फ एक टैक्स का वहन कर रहे है।
- GST एक अच्छा व सरल कर है। यद्यपि यह भी निर्विवादित सत्य है कि इससे जुड़ी कुछ छोटी-मोटी समस्यायें भी हैं जिसका निराकरण भी किया जा रहा है। मुख्य समस्याओं में प्रक्रियात्मक उल्झनों, लेट फीस को लेकर विवाद, इनपुट क्रेडिट से जुड़े कठिन प्रावधान, जीएसटी नेटवर्क से जुड़ी समस्यायें हैं। जिन्हें नियमित रूप से अधिसूचनाओं को जारी कर समाधान किया जा रहा है। सरकार पूर्ण रूप सें GST के सरलीकरण व स्थिर करनें के लिए कृतसंकल्प नजर आ रही है।
- करों के Cascading Effect को समाप्त कर, GST की संकल्पना ऐसी थी कि जिसमें भारत में एक ही अप्रत्यक्ष कर लगेगा जिसे केंद्र सरकार एकत्र करेगी और उसे अपने व राज्यों में बाटेंगी तथा इससे व्यापारी वर्ग ही नहीं अपितु समस्त नागरिकों का भी कल्याण होगा। भारत सरकार के निरंतर प्रयासों से आज GST न सिर्फ सफलतापूर्वक समस्त भारतवर्ष में लागू हो गया है अपितु GST संग्रह ने अब तक के समस्त रेकॉर्डों को धराशाई करते हुए मार्च, 2022 में रेकॉर्ड 1.42 लाख करोड़ रूपये से भी ज्यादा रहा है।
- नकारात्मक उर्जा का त्याग कर, हम सभी भारतवासियों को यह चाहिए कि अपने भूमिका व कर्तव्यों का पालन करते हुए चाहे वह एक कर्मी की भूमिका हो या नागरिक की जीएसटी के नियमों का अनुपालन करें, व देशहित में अपना योगदान दें।

'जय हिन्द जय भारत'

**- मनोज कुमार**
अधीक्षक

## काव्य-संग्रह

### माँ का जहां

सारे जहां की खुशियाँ
जिनकी दुआओं में मिल जाती हैं,
माँ है वो भगवान,
जो घर को स्वर्ग बनाती हैं!!

जब अँधेरा मुझे सताए,
थपकी माँ की सुकून दे जाए!

मीठी नींद भागकर आए,
माँ जब अपना आँचल ओढ़ाए!!

मैं तो हूँ एक बच्ची शरारती,
दिखाती हो माँ तुम जन्नत, बन मेरा साथी !!

माँ सारी दुनिया तो है बहुत स्वार्थी,
फिर भी अध्यापक बन तुमने मेरी,
बनाया है मुझे एक अच्छा विद्यार्थी!!

तारीफ़ इतनी कि शब्द कम पड़ जाते हैं,
शायद इसलिए सब लोग
'Mother's Day' मनाते हैं!!

**- किरन**
श्री अमित कुमार,
निरीक्षक की बहन

## काव्य-संग्रह

### एक सैनिक की भारत माँ को प्रार्थना

जब जब माँ ने पुकारा है मुझे सामने पाया है।
अपना सर्वस्व लुटाने को, माँ की लाज बचाने को,
जब जब मौका आया है यह तन क्या, यह मन क्या
सारा जीवन माँ के चरणों मे चढ़ाया है।

अपना कर्तव्य निभाने में, मन मे रहता संतोष सदा,
कि मातृभूमि की रक्षा मे  मैं भी कर पा रहा फ़र्ज अदा
कि मैं वो कपूत नहीं जो माँ की पीठ मे छुरा भोंके,
और ना ही मैं वो कायर जो किसी राष्ट्र  द्रोह को ना रोके
जिन्हें नहीं सरोकर अपनी माँ से दौलत के जो दास हैं,
अपनी माँ की अस्मत बेच करते गद्दारी का रास हैं
डर नहीं माँ मुझे किसी बाहरी का पल में हर लूँगा उसके प्राण,
पर जो ही गद्दारी अपनों से तो नही हैं उसका कोई राम बाण।

मोह नहीं इस तन का माँ मुझे प्राण तक लुटा दूगां मैं,
पर जिन्हें पीछे छोड़ आया हूँ उन्हें ना भूल सकूँगा मैं
आस भरी निगाहें, अधूरे अरमान, चिंतित मन और माँ का प्यार,
मेरी दुलारी का छोटा सा संसार और पिताजी की फटकार
मेरा बलिदान स्वीकार करना माँ सब पीछे छोड़ आया हूँ,
तेरे चरणों में तन-मन-धन समर्पित सब बिसरा आया हूँ।

अगर उठी जो आँख तुझ पर तो तेरे लाल आगे आयेंगे
और तेरी रक्षा की खातिर अपना शीश कटायेंगे।

अन्तिम शब्द-
ऐ माँ ये बलिदान स्वीकार करना और सेवा ना कर पाऊँगा,
करम किये होंगे अच्छे मैंने तो फिर तेरी गोद मे जन जाऊँगा
ये सांसें उखड़ती हैं, नष्ट हो रहा है यह तन,
परन्तु मुख पर मेरे संतोष की मुस्कान कि
मेरी माँ की सुरक्षा का किया मैंने जतन,
अन्तिम इच्छा यही है मेरी कि तेरा वैभव अमर रहे
और निरंतर ऊँचाइयों तक तेरा सफर रहे।।

**- सौरभ भारद्वाज,**
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

# काव्य-संग्रह

## खतरे में हमारा परिवेश

खतरे में ना कोई धर्म है,
खतरे में ना कोई देश है
खतरे में है, पंचतत्त्व
ये धरा,
ये आसमां,
ये अग्नि
ये जल,
ये हवा,
जो चैतन्य है, उसे बोध है कि,
खतरे में हमारा परिवेश है

यहाँ लोकतंत्र है, यहाँ कानून का राज है
यहाँ धर्म और धर्मस्थलों में होती,
पूजा, प्रार्थना, अरदास और नमाज है
फिर भी यहाँ सुरक्षित नहीं
इंसां
न बहु, न बहन, न बेटियां
न सुरक्षित है, दो वक़्त की रोटियां
फिर क्यों हमारी लड़ाई का मुद्दा?
धर्म, पूजा, प्रार्थना, और नमाज़ है
पर जो चैतन्य है, उसे बोध है कि,
असल में, खतरे में हम सब है,
खतरे में हमारा समाज है,
हम नासमझ हैं,
या भोले है, या विक्षिप्त हैं
क्योंकि अभी हमारी लड़ाई का मुद्दा,
व्यक्तित्व है पर हम में जो चैतन्य है,
उसे बोध है कि,वास्तव में,
खतरे में हमारा अस्तित्व है,
खतरे में हमारा अस्तित्व है,

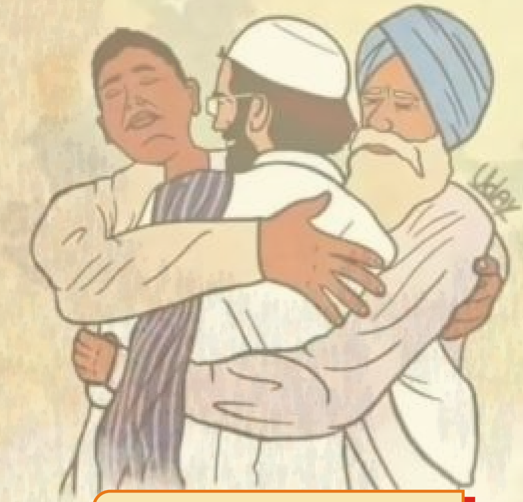

## आखिर कब तक

आखिर, कब तक हम यूहीं बटें रहेंगे?

फ़िजूल के मुद्दों पर डटें रहेंगे
कब हम सही मुद्दों को जानेंगे?

कब हम सही खतरे को पहचानेंगे?
अब असुरक्षा, अन्याय,
और अधर्म के विरुद्ध

हम सबको मिलकर बिगुल बजाना होगा
एक दूसरे को लोकतंत्र का
मकसद समझाना होगा

पंचतत्त्व की सुरक्षा से,
परिवेश सुरक्षित होगा
और सुरक्षित परिवेश में हमारा,
अस्तित्व सुरक्षित होगा।

**- अमित कुमार**
निरीक्षक

## काव्य-संग्रह

# जागो ग्राहक जागो

जागो ग्राहक जागो मुहीम,
हर गाँव, हर शहर फैलाएं।

आओ हम सब मिलकर आगे आएं,
जागो ग्राहक जागो मुहीम हर गाँव, हर शहर फैलाएं।
अपने हक़ के लिए अपनी आवाज़ उठाएं,

नकली, और मिलावटी सामान कभी भी घर न लाएं।
आओ हम सब मिलकर आगे आएं,
जागो ग्राहक जागो मुहीम हर गाँव, हर शहर फैलाएं।।

किसी भी सामान का मूल्य हम
खुदरा मूल्य से अधिक न दे आएं,
इसके लिए हर उपभोक्ता मोल भाव की
तकनीकी जरूर अपनाएं।

अधिकतम मूल्य के जाएं खिलाफ,
न करे कभी इसके लिए दुकानदार को माफ़।।
ऐसा वैसा कोई भी विज्ञापन हमें भ्रमित न कर पाए ,
आओ इसके खिलाफ हम सब मिलकर आगे आएं।

अच्छे उत्पादों की यही पहचान ,
छ्पा हो इन पर आई.एस.आई.(ISI)/
एगमार्क का निशान।
तो अब जब भी बाजार जाएं,
आई.एस.आई./एगमार्क के
निशान वाले उत्पाद ही घर लाएं।।

दूरसंचार समस्याएं जैसे कॉल ड्राप या
ख़राब नेटवर्क से हैं परेशान,
ऐसे में 1997 ट्राई एक्ट है
इन समस्याओं के खिलाफ़ वरदान।

तो फिर कभी भी अपने कदम पीछे न हटाएँ,
आओ हम सब मिलकर आगे आएं,
जागो ग्राहक जागो मुहीम हर गाँव, हर शहर फैलाएं।

निर्माता का है महत्वपूर्ण काम,
बताए उपभोक्ता को सही गारंटी,
वारंटी व दाम।
करे यदि निर्माता गारंटी,
वारंटी बताने से इन्कार,
उपभोक्ता कानून 1986, के अंतर्गत
पड़ेगी करारी मार व फटकार।।

हर पीड़ित उपभोक्ता को
देने के लिए पूरा इन्साफ,
उपभोक्ता अदालते कभी
नहीं करती गुनेहगार को माफ़।

चलो फिर अब हर तरफ ये
महत्वपूर्ण सन्देश पहुचाएं,
आओ हम सब मिलकर आगे आएं।
जागो ग्राहक जागो मुहीम हर गाँव,
हर शहर फैलाएं।।

हर सामान का पक्का बिल बनवाएं,
दुकानदारों की धोखाधड़ी से खुद को बचाएं।

यदि पक्का बिल देने से इंकार करे दुकानदार,
कंज़्यूमर कोर्ट में तुरंत, शिकायत दर्ज
कराने का है आपको पूरा अधिकार।।

यदि दुकानदार, सर्विस प्रोवाइडर,
कंपनी या कोई डीलर आपको फंसाए,
तुरंत, उपभोक्ता राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर
1800-11-4000 पर निःशुल्क कॉल लगाएं।

इसी बात पर आओ हम सब मिलकर आगे आएं,
जागो ग्राहक जागो मुहीम हर गाँव,
हर शहर फैलाएं।।

**- किरन**
श्री अमित कुमार,
निरीक्षक की बहन

## काव्य-संग्रह

# Bloom and Moon

[Flowers like Flame of the Forest (palas) pink cherry blossoms, yellow forsythia, white dog wood etc. are first to bloom but are not long lasting. Summer flowers are beautiful, colourful, fragile and ephemeral. Based on their longevity in the tropical area they can be listed as Crape Myrtle, Southern Magnolia, Golden Rain Tree, Gulmohar, Yellow Elder, Cassia Fistula, Queen's Crape Myrtle and Dwarf Yellow Poinciana. While these flowers bloom and die one by one, your eyes can feast upon bougainvillea which remains in the background.

For their beauty flowers are worthy of worship. However within weeks blooms succumb to nature's transformative nourishment and vanish into the soil.

Here is a poem on the brevity of flowers and mankind as well...]

*From Gangetic plains to desert of Simpson,*
*Your magical spell is cast in deep crimson.*

*Come summer and you red Gulmohar,*
*Spread myriad sheets of vivid colour.*

*Along with the bright Yellow-Elder,*
*Arrayed along the avenues yonder!*

*There are two more blooms in*
*peach and in white,*
*I don't know their names that are*
*botanist's delight.*

*The kaleidoscopes, for a while, stay,*
*With advent of spring till end of May.*

*The colour bands in crimson*
*pink ,yellow and lavender,*
*In the backdrop of azure sky,*
*are beholder's wonder.*

*In the evening breeze they rustle and sway,*
*The pinnacle of their glory makes one gay!*

*Lovely flowers dancing in wind*
*are vainglorious,*
*Oblivious to their fate of a*
*short lived narcissus.*

*Rains begin and the honeymoon is over, why?*
*The state of bliss is broken when air turns dry.*

*The ephemeral elegance*
*the flora have got,*
*Falls on earth in a carpet of*
*dry petal and pod.*

*Time makes a hag out of exquisite Venus,*
*Garden in bloom wilts into parched genus.*

*The beauty of Moon Sea*
*and star lit-sky,*
*Mocks at blooms with*
*an approach wry.*

*Evergreen Jungles, Mountains and stream,*
*First whisper into my ears and then scream-*

*'We are eternal unlike*
*the transient dream,*
*In the form of blooms,*
*women and nightingales'.*

*A melancholic crane in winter whines and wails-*

*'This year I migrated, next year*
*I might not attend,*
*But thousands of my kind will*
*sojourn at this wet land.*

*In the same way as season changes*
*and flower withers,*
*But the next spring brings*
*fresh crop of lovely bloomers.'*

**- Brajesh Kumar**
Deputy Commissioner

# काव्य-संग्रह

## ठहर जा ए बन्दे

ज़रा ठहर जा बन्दे
इतनी जल्दबाजी क्यों
जब चाहता है बहुत जीना
तो जिंदगी की दौड़ में आना है सबसे आगे क्यों
जब मंज़िल तेरी कुछ और है
तो तेरा रास्ता ये क्यों
जब संभालना तुझे सीरत (रूह) को है
तो सूरत संवारने पर ध्यान इतना ज़्यादा क्यों?
जब खुले आसमान के चाँद तारे हैं तेरी चाहत
फिर घर की दीवार सजाने पर ज़ोर ज़्यादा क्यों
मिल रही है अगर ख़ुशी खुली, अच्छी हवा में
तो बड़े शहरों की तरफ भागा जा रहा क्यों
ठहर जा ए बन्दे
जल्दबाजी इतनी ज्यादा क्यों
जी ले ना इस पल को गँवाना क्यों
ठहर जा ए बन्दे
जल्दबाजी इतनी ज़्यादा क्यों?

**- प्रवीण कुमारी**
आशुलिपिक

## क्या यह जिंदगी दो चार दिन की है?

कहते हैं कुछ शख़्स कि ज़िंदगी सिर्फ दो-चार दिन की है
क्या यह सच है?
सब यह भी कहते हैं कि दो चार दिन की है ज़िंदगी
तो मौज और मस्ती से ही जिया जाए।
क्या यह सच है?
यह सिर्फ दो लफ़्ज़ों में कहना आसान है
चार दिन कभी चार हफ्ते नहीं हो जाते?
और कभी चार महीने नहीं हो जाते?
ओर चार वर्ष नहीं हो जाते?
या कभी चालीस वर्ष नहीं हो जाते?
फिर कभी चालीस वर्ष का दो गुणा नहीं हो जाते?
हकीकत में यह सिर्फ कहना आसान है
अगर कोई मौज मस्ती में जीए
अचानक धन-दौलत खत्म हो जाए लुटा-लुटाकर
जैसे रास्ते का पत्थर ठोकरें खाता है
वैसे यह ज़िंदगी ठोकरें नहीं खा सकती?
कोई दर्दनाक बीमारी आ जाए
तो रहे कहाँ यह मौज मस्ती ?
तो फिर ज़िंदगी का एक-एक पल
है बड़ा ही कीमती
अल्लाह जाने किस मोड पे ले जाए ये ज़िन्दगी
किसी ने कहा है बिल्कुल सही कि
जिंदगी एक आईने की तरह है
ये तभी मुस्कुराएगी
जब आप मुस्कुराओगे और
कीमती इस ज़िंदगी को अच्छे कामों से सजाओगे ।

**- अन्नम्मा जॉय**
अधीक्षक

# काव्य-संग्रह

## स्वच्छ भारत

बस की खिड़की से देखा मैंने जब एक नज़र,
लोग फेंक रहे थे अपना कूड़ा कचरा इधर उधर।

सोचती हूँ कि क्या उनके घर में भी यही हाल है?
क्या इस लिए अपनी 'भारत माँ' इतनी बीमार है?

ना चाहते हुए भी कभी उनको टोक देती हूँ,
अपनी उलझनो में भी कभी उनको रोक देती हूँ,

पूछ लेती हूँ गुस्से में कभी उनकी इस मजाल को,
और वो हँस कर मुकर जाते है अगली बार को।

ऐ इन्सान तू इस ज़मीन पे
आके कुछ तो अच्छे कर्म कर,
जिस 'भारत माँ'ने तुझे सब कुछ दिया है,
उसपे कुछ तो रहम कर।

ना फेंक कूड़ा कचरा तू यहाँ-वहाँ,
अपने घर की तरह इस देश को भी बना
तू एक स्वच्छ जहान।

## चालाक लोमड़ी

(यह कविता एक दोस्त ने उसके दोस्तो में करवाए झगड़े पर)

सुनो सुनो तुम एक कहानी,
चालाक लोमड़ी बड़ी सयानी..

करती रोज़ वो नए नए खेल,
सुबह, शाम और दोपहर...

चालक थी वो उतना,
पकड़ पाए हम कभी ना,
बड़ी सफाई से करती वो खेल,
सुबह, शाम और दोपहर...

सता के सबको वो बनती 'स्मार्ट',
सब कहते उसको 'ओवर-स्मार्ट'।

उसको था अपने पर बहुत गुरुर
क्योंकि साथ था उसके 'सेम' सुरूर...।

किया लोमड़ी ने एक दिन बड़ा खेल,
फसा दिया सबको झूठा सुनाके 'शेर',

दोस्त बिचारे समझ नहीं पाए,
कर दी उन्होने अपनों से लड़ाई...।

दबे पाव आई लोमड़ी ज़िन्दगी में,
दोस्ती बदल गई दुश्मनी में ।

तोड़ दिया सबका दिल और जान,
कराया सबको 'डीवाइड एंड रुल' का ज्ञान,
अब बताओ तुम सारे पहलवान?
कौन हैं कौन हैं वो 'शैतान'???

**- हेली देवेशभाई शाह**
(उत्सव किरीटकुमार पटेल, निरीक्षक की धर्मपत्नी)

## आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित सम्मान समारोह एवं पदयात्रा की झलकियां

श्री सुनील कुमार सिंह, प्रधान आयुक्त को पदयात्रा में योगदान हेतु प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त श्री रविन्द्र कुमार द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया गया।

## स्वतंत्रता दिवस की झलकियां

# काव्य-संग्रह

## रोशनी तेरे पीछे जो चलती रही

आओ, प्रिय ! सागर बुलाता,
आज तह की ओर तक...

प्रीत के विस्तीर्ण सागर,
में हृदय की नाव लेकर ।

भावना की उर्मियों का,
वो उमड़ता ज्वार उर्वर ।

नव-सृजन की भोर तक...
आओ, प्रिय ! सागर बुलाता,

आज तट की ओर तक...
कोई भी मँझधार ना हो,

साथ में पतवार ना हो ।
यूँ ही बस बहते रहें हम,

लक्ष्य ना हो, पार ना हो ।
सृष्टि के उस छोर तक...

आओ प्रिय ! सागर बुलाता,
आज तट की ओर तक...

फूल खिलते रहे, उम्र बढ़ती रही,
यूँ चमन की फ़िज़ा रंग बदलती रही ।

मैं रुका था तुम्हारे लिए देर तक,
राह क़दमों के नीचे फिसलती रही ।

इक तमन्ना का दम टूट पाया न था,
दूसरी खिलखिला कर मचलती रही ।

शमा बनकर जली रौशनी न हुई,
ज़िन्दगी लम्हा-लम्हा पिघलती रही ।

दिल तड़पता रहा रूह रोती रही,
रात यादों के मंज़र बदलती रही ।

ज़िन्दगी यूँ सफ़र में रही उम्र भर,
एक छाया अँधेरे में चलती रही ।

प्यास प्रेमी चकोरे की बुझ न सकी,
चाँदनी रातभर उसको छलती रही ।

कुछ दिये रात की साजिशों में रहे,
तीरगी रौशनी भी निगलती रही ।

तुझसे आगे तो साया है 'चन्दन' मेरा,
रोशनी तेरे पीछे जो चलती रही ।

**- अजीत आर. सिंह**
अधीक्षक

# चिंतन

भारत को ऋषि मुनियों की धरती कहा जाता है और यहाँ के लोगों के बारे में कहा जाता है कि वे वसुधैव कुटुम्बकम् में विश्वास करते हैं। इतनी अच्छी संस्कृति में पल कर हम इतने हिंसक कैसे हो सकते हैं? ये एक बहुत बड़ा प्रश्न इस दुनिया (मानवतावाद) के सामने खड़ा होता है। दिल दहल गया जब आज सुबह यह खबर पढ़ी कि मध्य प्रदेश के एक ज़िले में दो दलित लड़कों को पीट-पीट कर मार दिया गया क्योंकि वो खुले में शौच कर रहे थे। सवाल ये नहीं है, कि खुले में शौच करना गलत है या नहीं। सवाल उठता है कि हम इतनी अमानवता की ओर बढ़ रहे हैं कि यह सोचना शुरु कर दिया है कि दुनिया में अपने से छोटे या कमज़ोर वर्ग को जीने का अधिकार नहीं है। बड़ा ही विचित्र चर्चा का विषय है यह। मन विचलित होकर बार-बार यही प्रश्न पूछ रहा है कि ऐसा क्या दोष था उन दलित, गरीब, बेसहारा बच्चों का। भगवान ने उनको गरीब घर में जन्म दिया क्या यह कसूर था ? या फिर खुले में शौच करना जुर्म है, जिसके लिए मौत की सज़ा दी जा सकती है? अगर नहीं है, तो सरकार का कार्य क्या है?

इन्ही सब बातों के साथ ये प्रश्न आप सबके लिए छोड़ देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप अपने आप से भी प्रश्न करेंगे...

**- आशुतोष मुगदिल**
निरीक्षक

जय हिंद !

# काव्य-संग्रह

## कोरोना की मार

मित्रों प्रस्तुत है एक स्वरचित अवधी कविता जो कोरोनाकाल की परिस्थितियों को दर्शाती है। लाचार, बेबस, गरीब, असहाय मजदूरों की जो किसी न किसी मजबूरी वश शहर के नौकरी धंधे छोड़कर अपने गांव वापस जाना पड़ा।

1. अमीरों का व्यंग/गरीबों की पीड़ा
अब काहे को रोना भैया अब काहे को रोना
तुम खांसेव तो खांसी हम खांसी तो कोरोना
तुम चले आयेव विमान, हमरे खाए का नहीं सामान
हम पैदर थामेंन कमान, रस्ता मा रोकिन पुलिस जवान
अब तो हम पोछी पसीना, अब काहे को रोना।
हर शहर में हमका गवा ठगा,
जिनका अब तक हम समझित रहय सगा
उइ मकान मालिक भी हम का दिहिन दगा,
परिवार सहित हमका दिहिन भगा
कहिन तुम्हरे चक्कर मा हमका हों जाई कोरोना
अब काहे को रोना भैया अब काहे को रोना।
पैरन में पड़ गए छाले, मिलय ना कौनो गाड़ी वाले
घर वालेन कय याद सतावे, आंख से आंसू छलकत जावे
पड़ गवा है मुश्किल में जीना
अब काहे को रोना भैया अब काहे को रोना।
दरबदर हम भटकित रहय,
उय होटल मा उड़ावत रहय मजा
हम दुई दुई दिन खाना नहीं खायेन,
हे भगवान ई गरीबी कय हमका यहय सजा
कर जोरी कै कही अब रहम करोना
अब काहे को रोना भैया अब काहे को रोना।
सरकार नहीं करिस कौनो इंतजाम,
जौन आए हैं विदेश से उय छलकावे जाम,
जो लैके आये हय कोरोना तमाम,
उनकय ना सुबह पतय चलय ना शाम
उड़ा लोगय की नींद चैन से सोना
अब काहे को रोना भैया अब काहे को रोना।
हजारन की भीड़ जमा होय गय,
वायरस फाइलय कय शंका बढ़ गय
बप्पा तब तक फोन किहि न घरे आवे से अच्छा वहीं रहव,
चाहो तो सरकारी टेंट में पड़े रहव
आइहो गांव दो फैली कोरोना
अब काहे को रोना भैया अब काहे को रोना।
सरकार जागी फरमान करिस,
अपने हर आलाकमान से कहिस
जांच हर लोगन कय करव,
खाना पानी रहय कय इंतजाम करव
मीडिया दिखावय तमाम नमूना
अब काहे को रोना भैया अब काहे को रोना।
तुम ख़ांसेव तो खांसी हम खासी तो करोना।

**मुक्तक**

2. मजदूर इतने बेबस लाचार नहीं होते
खोकर अपने सपनों को रातों को नहीं सोते
देश की तरक्की और विकास में योगदान है इनका
सोचो कितनी मुश्किल में हैं इनका जीवन यह ऐसे नहीं रोते।

3. जब किसी की लाचारी किसी की बेबसी को बोयेगा,
तू भी रोयेगा तेरा वक्त भी रोयेगा
लगेगा श्राप तुझको इन बेबस मजदूरों का,
खुली आंखों से एक दिन तू भी सोयेगा।

4. लाँघने को जी करता है लाकडाउन का क्रास,
कदम सहम जाते हैं उठता है मन में त्रास,
बंद घरों में बीत रही है छुट्टी जिनके कारण,
लगेगा श्राप करोना तेरा होगा सत्यानाश।

5. खाते हो जो अन्न वह गमले में उगा नहीं करता,
नेताओं की तरह किसान किसी को ठगा नहीं करता,
जी तोड़ मेहनत करता है फसलों को उगाने में,
आजकल के जमाने में इतना कोई सगा नहीं करता

6. मेरे गीतों को अपने दिल का साज बना लेना,
मोहब्बत के ख्यालों में इक ताज बना लेना,

तेरी यादों को कब तक संजोएगा ये दिल,
मेरे लफ्जों को अपने होंठों की आवाज बना लेना।

7. राह जीवन की कठिन है मगर सफर सुहाना लगता है,
अगर हो जाए मोहब्बत तो हर मौसम दीवाना लगता है,
अमर हो जाती है वह प्रेम कहानियां इस कदर,
जले जब-जब शमा तो फना हर परवाना लगता है।

8. तेरे लफ्जों की तरन्नुम खामोशी में सताती है,
संग गुजरे वक्त की अहमियत बताती है,
यूं तो गुजर रही है सादगी से जिंदगी अपनी,
याद करके आंसुओं पर अपना हक जताती है।

9. रोक लो अपने आंसुओं को इन्हें यूं न जाया करो,
बड़े अनमोल है ये यू ना बहाया करो,
दुआ मेरी दवा बनकर असर करेगी इक दिन,
बस प्यास अपनी आंसुओं से ना बुझाया करो।

10. अस्मत के लुटेरों का तुम काल बन जाओ,
मर जाए तड़पकर वह ऐसा जाल बन जाओ,
सजा दो तुम उन दरिंदों को ऐसी,
पीढ़ियों तक इक नयी मिसाल बन जाओ।

11. किस्से मोहब्बत के कभी पुराने नहीं होते,
प्रेम के पक्ष में कभी जमाने नहीं होते,
ना रहो कभी तन्हा गर हो जाए किसी से प्यार
छोटी सी जिंदगी के कोई ठिकाने नहीं होते।

12. जिंदगी को मेरी एक कहानी दे गई,
यादों को मेरी एक जवानी दे गई,
मैं भुला तो दूं उसे मगर,
चेहरे पर दर्द की एक निशानी दे गई,

13. जो समझ में ना आए मैं वो साज़ हूं,
इक गुजरे हुए कल का मैं आज हूं
कैसे यकीं करोगे तुम मेरा,
पुरानी किताबों में एक नया ताज़ हूं।

14. करें कोई जिक्र तेरा दिल को थाम लेते हैं,
खोकर तेरी यादों में फिर जाम लेते हैं,
नींद आगोश में ले लेती है मुझे,
लोग कहते हैं ख्वाबों में तेरा ही नाम लेते हैं।

15. गुजरे हुए वक्त को रोया नहीं करते,
खोकर अपनों को गुमसुम होया नहीं करते,
तू है अपने घर का हौसला हिम्मत बनाए रख,
धैर्यवान अपने आंसुओं को खोया नहीं करते।

16. सिलसिले थे ऐसे कुछ रास्ते भी विराने हों गये,
संग रहने वाले दोस्त भी पुराने हो गए,
नफरतों का दौर कब तक चलता,
नफरत करने वाले भी मेरे दीवाने हो गए।

17. तेरी आंखों में बस जाऊं काजल की तरह,
तेरी जुल्फों में छिप जाऊं बादल की तरह,
राह-ए-मोहब्बत में हो जाऊं इस कदर फना,
ढूंढ़ती रहे तेरी नजरे मुझे पागल की तरह।

18. आज की मोहब्बत में यह मंजर ना मिलेगा,
हम जैसों के गमों का समंदर ना मिलेगा,
वैसे टूटते तो है लोगों के दिल बहुत,
टूटा हूं इस कदर दिल सीने के अंदर न मिलेगा।

19. मेरी अनसुलझी पहेली का तुम जवाब बन जाना,
खुली आंखों से जो देखूं ऐसा ख्वाब बन जाना,
संवार सको यदि तुम जिंदगी मेरी
तो मेरी दिल की सल्तनत का तुम नवाब बन जाना।

20. वो मिले मुझे यह किस्मत को मंजूर न था,
यादों में गुजरेंगे दिन ऐसा दस्तूर ना था,
सोचता हूं मैं ये बात सब अक्सर,
मिल जाता मैं उन्हें पर मुझ में उनके जैसा गुरूर ना था।

रचनाकार :
**शचींद्र गुप्ता**
अनूप कुमार गुप्ता
आशुलिपिक के मामाजी

# अहमदाबाद से अम्बाजी की दिव्य पदयात्रा

गुजराती माह भादरवा की सूद पक्ष में गुजरात एवं गुजरात के बाहर से लगभग 20 लाख भक्तगण माँ अम्बा के यात्राधाम अम्बाजी पदयात्रा कर के दर्शन हेतु आते हैं और 7000 से भी ज्यादा ध्वजाएं माँ अम्बा को अर्पित की जाती है। भादरवा माह की पूर्णिमा माँ अम्बाजी का प्रागट्य दिन है और कहते हैं कि उसी दिन से वहाँ नवरात्रि उत्सव का भी प्रारंभ होता है। अम्बाजी 52 शक्तिपीठों में से एक शक्तिपीठ है, कहते हैं कि यहाँ माता सती का ह्रदय गिरा था। यह ह्रदय लाखों भक्तों को प्रेमभाव से अपनी ओर खींच लाता है।

अहमदाबाद से अम्बाजी तक की ऐसी दिव्य पदयात्रा का मुझे वर्ष 2013 से वर्ष 2016 तक चार साल तक मौका मिला। अहमदाबाद से अम्बाजी तक की दूरी 180 कि.मी. है, किसी वाहन से यह दूरी 3 से 4 घंटे में आसानी से पूरी हो सकती है, मगर पदयात्रा में यह दूरी 5 दिन में तय की जाती है।

भादरवा माह की दसवीं तिथि को सुबह में 8 बजे अहमदाबाद स्थित चांदखेड़ा से हमारे यात्रासंघ 'जय अम्बे पदयात्रा संघ' की पदयात्रा का प्रारंभ होता है। हम अपने साथ लाये हमारे सामान को साथ चलनेवाली ट्रक में रख देते हैं और अम्बे माँ की आरती एवं स्तुति करके यात्रा का शुभारंभ करते हैं। माँ अम्बे का जयघोष करते हुए, बातें करतें हुए सभी पदयात्री अपनी पहली मंजिल उवारसद गाँव की ओर बढ़ जाते हैं। उवारसद (अडालज से होते हुए) तक की 12 कि.मी. की दूरी तीन घंटे में पूरी हो जाती है, क्योंकि ये शुरुआत होती है इसलिए विश्रामस्थल नज़दीक होते हैं। वहाँ सुन्दर मंदिर में हमारे लिए दोपहर के खाने की व्यवस्था होती है, जो साथ में चलने वाली ट्रक में सवार रसोई टीम करती है। पहले दिन का रात्रिनिवास रांधेजा में होता है, वहाँ पर भी हर साल कई यात्री रात्रि को रुकते हैं, इसलिए गाँव ने मंदिर के पास 500 लोग रह सकें उतनी बड़ी धर्मशाला का निर्माण करवाया है। 12 कि.मी. की दूरी तय करके शाम 7.30 तक सभी पदयात्री रांधेजा पहुँचते हैं। वहीं पर रात को आरती स्तुति एवं बाद में भोजन होता है।

दूसरे दिन सुबह में जल्दी हम सुबह में 6 बजे यात्रा का प्रारंभ कर देते हैं और सबसे पहले 3 कि.मी. दूर वासणिया महादेव के दर्शन करते हैं। दर्शन करने के बाद बालवा चोकड़ी एवं आमजा होकर 16 कि.मी. दूर वागोसणा गांव में दोपहर के भोजन एवं आराम हेतु रुकते हैं। रास्ते में यात्रियों की सुविधा के लिए कई सारे भण्डारे लगते हैं। यह भंडारे खाने के हों या चाय के, आईसक्रीम के हों या फल के, पदयात्रियों की सेवा करके हर कोई अपने आपको भाग्यशाली समझता है। माँ अम्बा के दरबार में जो पदयात्रा करके पहुँचता हो उनकी सेवा करना भी पुण्य का काम समझा जाता है। ऐसे ही भक्तों को मिलते-मिलते हमने वागोसणा से निकलकर वसई तक की 16 कि.मी. की दूरी गोजारिया से होते हुए तय कर ली और अपने रात्रि आवास पर पहुँच गए। हर रोज की तरह आरती, स्तुति और माँ अम्बे के भजन भी गाए और भोजन भी किया। आज ही की रात वसई नामक इस गाँव से भी माँ अम्बा का बड़ा संघ निकलने वाला था। पूरा गाँव रथ के दर्शन हेतु उमड़ पड़ा था और हम भी उनके साथ जुड़ गए। रात्रि विश्राम करके, अगले दिन सुबह चार बजे निकलना था, इस लिए बिना समय गंवाए हम सो गए।

तीसरे दिन सुबह चार बजे हम आगे की यात्रा के लिए निकल पड़े। हमारा आज का दोपहर तक का लक्ष्य था बिसनगर, जो 21 कि.मी. की दूरी तय करके पहुँचना था, वही दोपहर का भोजन एवं आराम का स्थान था। आज यात्रा में मुलाकात हुई 80 वर्षीय माताजी से, जो पिछले 52 सालों से लगातार इस पदयात्रा को कर रही हैं। उनकी निष्ठा और माँ अम्बा के प्रति श्रद्धा देखकर में अभिभूत हो गया। उनसे चलते-चलते हुई बातें, उनके यात्रा के अनुभव सुन के लगा कि मुझ में अभी काफी त्रुटियां है, जो में जरूर सुधारूँगा। रास्ते में चाय, नास्ता करते-करते हमारा संघ दोपहर 11.30 बजे बिसनगर पहुँच गया। बिसनगर अम्बाजी जाते

समय आनेबाला बड़ा शहर है और यहाँ यात्रिओं को सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हो जाती हैं। दोपहर को खाने एवं सुस्ताने के बाद 4 बजे हम फिर से हमारे अगले गंतव्य स्थान रंगपुर की ओर निकल पड़ते हैं। रास्ते में कई लोग खुले पांव अडिग श्रद्धा के साथ चलते दिखाई देते हैं, तो कोई साष्टांग नमस्कार करते हुए आगे बढ़ते दिखाई देते हैं, तो कोई अपनी आँख पर पट्टी बांध के अपने साथी की सहायता से चलता दिखता है। कोई मातापिता अपने बच्चों को बाबागाड़ी में बिठाकर यात्रा कर रहे होते हैं, तो कोई बेटा अपने माँ-बाप को कंधे पर उठाकर श्रवणकुमार की तरह यात्रा करवा रहा हो, ऐसा दिव्य दृश्य भी दिखाई देता है। इन सभी लोगों को देखकर मन में एक ही प्रार्थना निकलती है कि 'हे माँ अम्बा आप सभी भक्तों की मनोकामना पूर्ण करना और उनका जीवन समृद्ध करना। ऐसे सुनहरे दृश्यों को देखते हुए, रास्ते में उमता नामक जगह से होते हुए हम कब रंगपुर पहुंच गए, पता ही नहीं चला। माँ अम्बे की आरती, स्तुति और भजन के बाद भोजन किया और तारों से भरे आकाश को निहारते निहारते सो गए।

तीन दिनों में 90 कि.मी. की यात्रा पूर्ण हो चुकी थी और आज चौथे दिन सुबह रंगपुर से निकलकर डभोला नामक जगह पर दोपहर तक पहुँचना था। डभोला तक का अंतर लगभग 24 कि.मी. था जो अबतक का सबसे लम्बा अंतर था। रास्ते में सुन्धिया, खेरालु होते हुए हम दोपहर 12.30 बजे डभोला पहुँच गए। रास्ते में खेरालु से आगे साईंबाबा का भव्य मंदिर आता है, जो दर्शनीय है, हम भी वहाँ गए और कुछसमय बिताया। डभोला में हम ऐसे स्थान पर रुके जहाँ बड़ा खेत था और उसकी सिंचाई हेतु बड़ा बोर भी था, जहाँ हम खूब देर तक नहाए और तरोताजा हो गए। भोजन और आराम किया, बाद में रात्रि मुकाम सतलासना की ओर चल दिए जो यहाँ से 16 कि.मी. की दूरी पर था। रास्ते में तरंगा हिल, तारण-धारण माता मंदिर से होते हुए शाम 7.30 बजे हम सतलासना पहुँच गए। यहाँ हमने अहमदाबाद से आए संघ को 52 गज की धजा के साथ गुजरते देखा, यह ध्वजा इतनी बड़ी थी कि उसे उठाने के लिए कम-से-कम 100 से 150 लोग एकसाथ चल रहे थे। यहाँ से बड़े भण्डारों की शुरुआत होती है, जहाँ एकसाथ 1000 लोग खाना खा सकें, स्नान इत्यादि कर सकें, ऐसी व्यवस्था होती है। हर रात्रि की तरह आज भी माँ अम्बे को भावपूर्ण हृदय से याद किया और आज का दिन खत्म हुआ।

आज पांचवा दिन, आज की यात्रा काफी कठोर साबित होती है, लोग भी बढ़ते जायेंगे और आगे की पैदल यात्रा के कारण शरीर भी जवाब दे देता है। आज सुबह 5 बजे उठकर हम हमारे दोपहर के गंतव्य स्थान भेमाण की ओर चल पड़े, जो यहाँ से 17 कि.मी. की दूरी पर है। आज के दिन की यात्रा का प्रमुख आकर्षण आम्बाघाट एवं त्रिशुलियाघाट रहनेवाला था। अम्बाजी यात्रा का यह एक कठिन मार्ग है जो 45 डिग्री पर 2 से 3 कि.मी. में फैला हुआ है, जिसको चढ़ने में सभी लोगों की साँस फूल जाती है और उसमें भी रथ को खींच के चढ़ना तो बहुत ही कठिन कार्य है, मगर जहाँ भक्ति है, वहाँ शक्ति है। माँ अम्बे का नाम लेते हुए सभी ने यह रास्ता पार कर लिया और सुबह 11.30 बजे भेमाण पहुँच गए। रास्ते में पाँव की मालिश करने के लिए कई सारे सेवाभावी लोगों ने टेंट लगाए थे, जो लोगों को

मसाज एवं घाव पर मलहम-पट्टी भी कर रहे थे, मैंने भी उस सेवा का लाभ लिया और उनका आभार व्यक्त किया, सलाम है उनकी भक्ति को।

यह हमारा अंतिम पड़ाव था, जहाँ पर हमारे पास दो विकल्प थे। पहला विकल्प था कि, रात्रि तक यहाँ रुक जाएँ और दूसरे दिन अम्बाजी पहुँच जाएँ और दूसरा विकल्प था कि, दोपहर को ही निकलकर रात्रि 1 बजे से पहले अम्बाजी पहुँचा जाए और दर्शन करके सुबह तक अहमदाबाद वापस घर वापस चला जाएँ। मैंने दूसरा विकल्प पसंद किया और खाना खाने के बाद 30 कि.मी. की अम्बाजी की दूरी तय करने का निश्चय किया। अब मैं यात्रा में हमारे संघ से अलग था, दूसरा जाननेवाला कोई नहीं था। फिर भी भादरवा की इस धूप में सर पे गमछा बांधकर माँ अम्बे का नामस्मरण करते-करते निकल पड़ा और शाम 5 बजे तक मैं दांता पहुँच गया। दांता में बड़े -बड़े पन्डालों में खाने एवं मनोरंजन की उत्तम व्यवस्था थी। इतना चलने के बाद भी गरबे की ताल पे झूमते हुए लोगों के क्या कहने थे? मैंने भी गरबे गांए और अच्छे गुजराती कलाकारों के गीत एवं डायरे भी सुने। ऐसे सुन्दर नज़ारों को देखेते-देखते, कुछ चाय-नास्ता करते हुए मैंने दांता भी पार कर लिया और अब बचे सिर्फ 19 कि.मी. की दूरी, जो कम से कम 6 घंटों में पूरी हो सकती थी। पाँव दर्द कर रहे थे, थकान हो रही थी, मगर श्रद्धा अविचल थी जो मुझे चलाती रही और माँ अम्बे का नाम स्मरण करते-करते मैं रात्रि 12.30 को अम्बाजी पहुँच गया। अम्बाजी में मानो रात थी ही नहीं। दूर-दूर से भक्तों का अविरत प्रवाह चला आ रहा था, लोग जयघोष कर रहे थे। प्रशासन कामगिरी में लगा हुआ था, मेला सजा हुआ था, मंदिर रोशनी से चमक रहा था। आने वाले लोगों की गिनती के लिए सेंसर लगे हुए थे कि जहाँ से पास होने पर भक्तों की गिनती हो जाती थी। भादरवी पूर्णिमा के कारण मंदिर रात्रि के 1 बजे तक खुला रहने वाला था, मैंने भी प्रसाद एवं फूल लिए और दर्शन के लिए मंदिर की ओर चल पड़ा। भव्यतिभव्य दर्शन करके आंखें तृप्त हुईं, नम हुईं और मन प्रसन्न हुआ। अगले साल फिर से आऊंगा ऐसा निर्धार करके माँ अम्बे के दरबार से विदा ली और बस स्टैंड जाकर अहमदाबाद की बस पकड़ी और पदयात्रा के संस्मरणों को याद करते हुए घर पहुँचा अपने परिवार से मिला और दिव्य पदयात्रा की बातों से उनको अवगत कराया।

छह दिन की यह यात्रा जीवन में उमंग भरती है, श्रद्धा और अपने आप पर विश्वास बढ़ाती है कि मैं भी कर सकता हूँ, मै कम नहीं हूँ क्योंकि जगतजननी माँ अम्बा का हाथ मुझ पर है। यह कभी न भूलनेवाले पल जीवन की अनंत यादें बन जाते हैं। जीवन में यदि मौका मिला तो आप भी कभी ये पदयात्रा करें और अपना जीवन धन्य करें।

जय माताद़ी !

**- संजय आर शुक्ल**
अधीक्षक

# जंगल और मानव की दोस्ती

प्रकृति की शुरुआत में एक बड़ा जंगल हुआ करता था, जिसमें सभी पेड़, पौधे, पक्षी, जानवर एवं मानव ख़ुशी और हर्षोउल्लास के साथ रहते थे। प्रकृति के इस सौंदर्य में तब मानव का स्थान भी एक जानवर के बराबर ही था। जंगल सबसे बड़ा था, पर वह सबका हितैषी था और वह सबका लालन पालन करता था। मानव और जंगल सभी अन्न के आसपास रहते थे। मानव को अपने लालन पालन के लिए जानवरों पक्षियों से बैर लेना पड़ता था क्योंकि वह अभी एकदम अनभिज्ञ था। उसका बैर अभी सिर्फ जानवरों पक्षियों से था, जिन पर कि वह पलता था। धीरे-धीरे उसको अपने वातावरण का ज्ञान हुआ, अब वह जंगल में उपजने वाले पदार्थों को जानने लगा। इस प्रकार जानवर और मानव एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी रहे, पर जंगल और मानव मित्र बन गये।

जंगल अलग-अलग मौसम में उगने वाले रसीले फल, बैरी, कंदमूल, अनाज, जल, आदि मानव को मित्रता की भेंट देकर खुश था। वहीं मानव को भी जंगल के रूप में एक सच्चा, हर वक़्त साथ देने वाला दोस्त मिल गया था। अब उसको अपने पोषण के लिये सिर्फ जानवरों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता था। जंगल उसका एक ऐसा सच्चा मित्र था जो उसको हर क्षण मदद करता था। जंगल का चरित्र एक परोपकरी व्यक्तित्व का रहा उसको चाहे कोई भी क्यों ना हो सबका ख्याल रखना अच्छा लगता था। उसकी सबसे दोस्ती थी, सब उसके साथ रहकर खुश थे, पर जैसा कि हुआ मानव को ज्ञान हो गया था।

एक दिन उसने जंगल से बोला, तुम तो इतने बड़े हो मुझे तुम्हारा कुछ अंश चाहिए। जंगल को पहले अजीब लगा कि हम साथ रहते हैं, मैं सबका ख्याल रखता हूँ, सबसे ज्यादा मुझसे कोई कुछ पाता है तो वह मानव है। फिर भी इसको मुझसे कुछ चाहिए। जंगल बोला मैं तुम्हारा पालनकर्ता हूँ, मेरा सबकुछ तुम सबका है फिर ये क्या मांग रहे हो? मानव बोला, 'मित्र मैं तुमसे कुछ जगह चाहता हूँ, जो सिर्फ मेरे लिए हो इसलिए पूछ रहा हूँ। जैसे कि सब तुमसे ही है सब तुम्हारा ही है।' जंगल ने अपने व्यक्तित्व के अनुसार बोला, मेरे मित्र, आज से मेरा जो कुछ है सब तुम्हारा है। पर इस बात का ख्याल रखना कि मेरा जो है उसका तुम ख्याल रखोगे। मानव ने बात मान ली।

अब मानव सबका ख्याल रखता था, जंगल ने अपना सर्वोपरि होने का अधिकार मानव को दे दिया था। धीरे-धीरे वक़्त बीता मानव खुद को सबसे सर्वोपरि समझने लगा। वो इस धुन में ऐसा अँधा हुआ कि उसने जंगल ही नहीं, उसके किसी भी अंश का ख्याल ना रखा। हालात ऐसे मोड़ पर आ गये कि जिस जंगल में सभी पेड़, पौधे, पक्षी, जानवर, एवं मानव साथ में ख़ुशी और हर्षोल्लास के साथ रहते थे, अब सब एक मानव के दायरे में समेट दिए। अब हालात ऐसे हो गये कि मानव का अस्तित्व भी खतरे में आ गया।

यूँ हुआ, जंगल ने जब मानव को खुद को सौंपते हुए सबकी देखभाल को बोला तो वह एक बात बताना भूल गया कि सबका ख्याल ही नहीं रखना है ख्याल ये भी रहे कि संतुलन भी रखना है। जैसा कि पहले भी हुआ था, अब फिर से ये ज्ञान मानव को हो रहा है कि जंगल से मित्रता फिर से करनी होगी, वो सिर्फ पालन पोषण ही नहीं करता, हमको शुद्ध, ताज़ा हवा भी देता है। उसको फिर से उसका वही स्थान देना होगा। वो सर्वोपरि है, सबका पालनहार है, उसके ही होने से संसार में संतुलन है, उसके वजूद से ही ये जीवन है। मानव ने जंगल से ये जो दोस्ती छोड़ी थी उसको फिर निभाना होगा, जंगल को फिर से बसाना होगा। यूँ चलता रहे प्रकृति का ये चक्र इसलिए इस मित्रता को फिर से बढ़ाना होगा।

**- अमित कुमार**
निरीक्षक

# लघुतर सुंडा द्वीप समूह : बाली यात्रा

इंडोनेशिया ब्राज़ील के बाद सबसे बड़ा जैव विविधता वाला देश है, जिसमें लगभग 17500 द्वीप हैं, हजारों द्वीपों पर कोई नहीं रहता है।

लघुतर सुंडा द्वीप समूह में बाली द्वीप मुस्लिम बाहुल्य वाले देश में हिन्दू बाहुल्य वाला रीजेन्सी है। यह जावा द्वीप के पूर्व में एवं लोम्बोक द्वीप के पश्चिम में स्थित लगभग 153 कि.मी. लम्बा एवं 112 किमी चौड़ा है। इसका क्षेत्रफल लगभग 521 वर्ग कि.मी. है। वीरान भूभाग पर आस्ट्रोनेशियन लोग लगभग 2000 ई.पू. ताईवान द्वीप से समुद्री रास्ते आकर बसे थे।

सन 1293 से 1500 ई. तक मजापहित हिन्दू साम्राजय स्थापित था, चम्पा सभ्यता के हिन्दू मंदिरों में लिखे शिलालेख संस्कृत और चाम दोनों भाषाओ में हैं, चामभाषा देवनागरी की तरह बायें से दायें लिखी जाती है, जो वियतनाम और कम्बोडिया में भी प्रचलित है।

इसी हिन्दू साम्राज्य से देश महान बना और इसे स्वर्णयुग माना जाता है। बाली में हजारों हिन्दू मंदिर है, यहाँ रामायण एवं महाभारत कालीन सांस्कृतिक विरासत लोकप्रिय है। रामायण पर आधारित इन नृत्य नाटिकाओं का आनन्द न केवल देश विदेश के पर्यटक उठाते हैं अपितु बाली के पर्यटन से होने वाली आय का यह एक प्रमुख स्त्रोत है।

जकार्ता से आगे हवाई जहाज़ में आई.यू.सी.एन. के कार्यक्रम के अन्तर्गत हमारा 7 सदस्यीय दल बाली की यात्रा के लिए रवाना हुआ और सुबह के धुन्धल में हवाई जहाज़ से समुद्र में डायनासोर आकार का भूपृष्ट नज़र आने लगा और कुछ ही क्षणों में ही हवाई जहाज़ राजधानी डेन पसार के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतर गया।

हवाई अड्डे का नाम 'आई गुस्टी नगूराह राय' में एक कागज़ पर याद रखने के लिए लिखने का प्रयत्न कर रहा था, तभी एक व्यक्ति ने थपथपाकर कहा नाम ही क्या लिखते हो, इनका पूरा इतिहास उधर है और उस मूर्ति की ओर इशारा किया जहाँ विवरण लिखा हुआ था 'यह इंडोनेशिया का राष्ट्रीय नायक लेफ्टिनेंट कर्नल रहा, मात्र 29 वर्ष की उम्र में इण्डोनेशियाई सेना का नेतृत्व करते हुए मगराना के युद्ध में डच लोगों का मुकाबला करते हुए मारा गया था', इण्डोनेशियाई मुद्रा 50 हजार के नोटों पर भी इसकी फोटो अंकित थी।

हम आगे बढ़े और डेनपसार बाली की राजधानी और द्वीप के मुख्य प्रवेश द्वार पर थे, शहर के नाम से लगता था, किसी गुफा से होकर गुज़रना पड़ेगा, परन्तु मार्गदर्शक एलिस लोबो ने डेन का अर्थ उत्तर और पसार का अर्थ बाज़ार बताया और आगे कुम्भन साड़ी बाज़ार था।

यह शहर लेसर सुण्डा द्वीप समूह के अन्य शहरों के लिए भी एक केन्द्र है, बडूंग नदी डेनपसार को विभाजित करती हुई बेनोआ की खाड़ी में गिरती है।

यहाँ अधिकांश होटल, रेस्तराँ, मॉल, केफे, बाजार और स्पा हैं जो पर्यटकों के लिए स्थित हैं। बाली इंडोनेशिया का प्रमुख पर्यटन स्थान 1980 से है, यहाँ 80% आर्थिक गतिविधियों का माध्यम पर्यटन ही है। इंडोनेशिया का फिल्म फेस्टिवल प्रति वर्ष यहाँ आयोजित किया जाता है।

डेनपसार क्षेत्र से स्थानीय दुकानों में सभी प्रकार के बाली के हस्तशिल्प का प्रतिनिधित्व किया जाता है, बाली संग्रहालय में स्थापत्य काल की वास्तुकला की सदियों पुरानी शैलियों से लेकर संग्रहालय में विस्तृत भण्डार थे। मन्दिर परिसर में पुरा मजापहित विशिष्ट टेराकोटा मन्दिर

18वीं एवं 19वीं शताब्दी का देखा। 1906 में डॅच हस्तक्षेप के दौरान शाही महल को लूट लिया गया था । तमन पुपुतन में एक मूर्ति इसकी याद दिलाती है, जिसमें राजा, दरबार और एक हजार बालिनी लोगो ने डॅच सैनिकों के सामने आत्मसमर्पण करने के बजाय सामूहिक आत्म हत्या की थी।

व्रज संधि स्मारक, वर्धी बुड्या कला केन्द्र, अपसाइड डाउन हाउस केमरा बीच, साकेन मन्दिर, पुरा अगुन जगतनाथ बड़ा गार्ड न कोर्नर बाली वेक पार्क देखते हुए हम प्रेमोगान गाँव क्षेत्र में मेंग्रोव फारेस्ट देखने के लिए निकल पड़े, नदी क्षेत्र में समुद्र के किनारे पर जड़ों की ऊँचाई लिए हुए यह 1375 हेक्टर क्षेत्र में था।

डेनपसार के बाहर भ्रमण कार्यक्रम सन्नूर, कुटा, नुसा दुभा, उलुवाटु, जिम्बरन, लेजियन, सेमिनयक तक टूर गाइड एलिना डोबरे के ज़िम्मे था।

सन्नूर बाली में एक विचित्र छोटे समुद्र तटीय शहर के रूप में विख्यात एवं आगन्तुकों के लिए शांत द्वीप का क्षेत्र था। सबसे पुरानी ऐतिहासिक कलाकृति 914 ई. में निर्मित बलेन्जाँन्ग पिलॅर, जालान दानु तरुशन देखने के बाद आगे तट-रेखा पर सैर करते हुए आगे बढ़े। जाकात द्रानु पोसों में भोजन करने के बाद हमारे कदम दूर म्यूज़ियम ले.मेयूर पर रुके। ले. मेयुरेट 1958 तक बाली में रहते थे। अधिकांश कला उनकी तथा उनकी पत्नी नी वायन पोलाने की पेटिंग से बनी हुई है जो एक बाली डांसर थी। घर कला के कई दृश्यों से भरा नजर आया। सड़क के दूसरी ओर जालान दनाउ-जुआरी में खरीददारी के लिए उपर्युक्त स्थान में एकाग्रता मिली।

Bali Traditional Dance

यहाँ पर कई जगह पतंग सर्फिंग का विकल्प था, हवा की भयानक शक्ति का उपयोग करके पानी के माध्यम से उड़ सकते हैं। समुद्र में गोते लगाने के लिए नाव से कुछ दूरी पर जाना पड़ता है, सड़क से दूसरी ओर ग्रियासैटियन गैलरी में कई प्रदर्शनियाँ थी, आगे हार्डी मॉल सुपर मार्केट में कई डिपार्टमेंट स्टोर, कपडे, लकड़ी की नक्काशी और स्थानीय सामानों के पैकेट के भण्डार थे।

सेरांगन द्वीप पर हम नाव से गये यहाँ कछुआ संरक्षण और शिक्षण केन्द्र 2.4 हेक्टर में फैला हुआ था, इसी प्रकार पास में बाली शार्क रेस्क्यू सेन्टर भी शिक्षण केन्द्र था, द्वीप पर दो हिन्दू मन्दिर थे जिसे डालेम सकेनान एवं पुरा डालेम सूसूनाम वाडोन कहा जाता है।

पताई इडाह में धूप सेवन के बाद बाली आर्किड गार्ड न जो 3 किमी दूर जाकान नौराहराय क्षेत्र में बाहर था भ्रमण किया। यहाँ फूल ज्वालामुखीय उच्च खनिज सामग्री में पनपते है। शाम को सुपासारी मार्केट होते हुए पसार सिन्धु नाईट मार्केट में घूमे।

अब हम पश्चिम की ओर मुड़ चले थे, एलिना ने बताया की यह कुटा बाली का सबसे प्रसिद्ध हिस्सा है, एक झूलता हुआ नाईट लाइफ का दृश्य था। यहाँ समुद्रतट पर नरम सुनहरी रेत थी, समुद्र तट कैफे और असंख्य रेस्तराँ के साथ लम्बे सैर स्थलों से भरा हुआ था।

बाली के बड़े जल पार्कों में वाटरबांम मनोरंजन का अच्छा स्थान है। यहाँ बूमरेंग और सुपरबोवेक जैसे विशाल राइड़ भी थे, आर्मेडा फ्लो हाउस, उल्टा विश्व, कोगको बायो चीनी मन्दिर एवं पास में बौद्ध मन्दिर की रंगीन भित्ति चित्र का मनोरम प्रांगण देखा।

बीच पर काफी समय सर्फिंग करने पर थकान दूर करने के लिए अपाचे रेगे में बिटांग का आनन्द लिया और तरो ताज़ा हुए। संग्रहालय कैनकुरा, काइन, कुटा थियेटर मे कठपुतलियों और जादुगरी जैसे विभिन्न प्रदर्शनों का आनन्द लिया।

आगे जालान लेसे वाली रोड़ की मुख्य पट्टी पर खुले वायु वातावरण में पॉप और रॉक गाने का लाईव संगीत सुनकर मन आत्म विभोर हो उठा। ड्रीम म्यूज़ियम ज़ोन देखने के बाद मौसम ख़राब हो चूका था, ग्रुप ने पेंडोरा खेल का अनुभव कर दिमाग तृप्त किया। लेकिन कुछ लोग यहाँ भी नहीं रुके और तेजी से बाउटी नाईटक्लब में नाचते हुए चले गये। यह एक स्टालवॉर्ट है और एक बड़े जहाज की तरह दिखने के लिए बनाया गया है।

हम लोग अब लीनेत बीच पर थे, यह कम भीड़ वाला क्षेत्र और रेत साफ थी, आगे 5 GX वाली रिवर्स बंजी, जिसमें एड्रेनैलिन पैक्ड सवारी के लिए सीट के अन्दर बैठ गए और हवा में 200 कि.मी. प्रति घन्टा की रफ़्तार से गुलेल कर दिये गये, शरीर जैसे वज़न विहीन हो गया। सर्फर गर्ल खरीददारी के बाद पागल लैग मकबरा सर्कस वाटर पार्क के बाद शाम को स्कॉई गार्डन लाउंज की शीर्ष मंजिल से नारंगी चमकवाला सूर्यास्त दर्शन देखा।

कुछ दूरी पर बाली मेमोरियॅल उन 202 लोगों के लिए समर्पित है जिन्होंने 2002 के बाली बम्ब विस्फोट में अपना जीवन खो दिया था।

वारुंगनिकमत के बाद होटल लौटते हुए लगा कि शहर रातभर जागृत अवस्था में है। दूर इंजन कक्ष से पॉप रॉक और टेक्नो की संगीत ध्वनि रह रह कर कानों में गूंज रही थी।

Nusa Dua Beach

अगले दिन हम डेनपसार से 22 कि.मी. की दूरी पर स्थित नुसा दुआ पहुँचे। नुसा दुआ का अर्थ है दो द्वीप, कई उच्च अंत (high end) रिसोर्ट यहाँ स्थित थे, यह एक समर्पित पर्यटन क्षेत्र था, सुनहरी रेत युक्त 350 हेक्टर भूमि में फैला हुआ था। गाईड ने कहा 'अगर आपको आराम दायक समुद्र तट पर छुट्टियाँ बिताने की तलाश है तो यह उत्तम स्थल है, यहाँ सांस्कृतिक गतिविधियों की पूरी श्रृंखला है'। आगे इशारा करके कहा, 'यह इस क्षेत्र का तान्जुग बेनोआ, यह एक मछुआरों का सोया हुआ गाँव हुआ करता था, जो बहुत ही जल्दी पर्यटन क्षेत्र में विकसित हुआ है, जो स्थल कभी बाली का छोटा स्थानीय डॉक था, अब बेनोआ क्रूज़ इंटरनेशनल टर्मिनल बन गया है, यहाँ अब 50 क्रूज़ शिप डॉक पर प्रति वर्ष लंगर डाले रहते हैं।'

पेटाई गीजर में सन लाउंजर किराये पर लेकर धूप सेकना एवं ठण्डी हवा में आराम करने का उत्तम स्थान था। आगे एडमायर वाटर ब्लो जिसमें समुद्र के पानी के विस्फोट को आकाश में देखना अविस्मरणीय दृश्य था, जो एक विशाल झटका केंद्र है, जो एक तंग रॉक के गठन का परिणाम है, ब्लो हॉल से थोड़ी दूरी बनाये रखना ज़रूरी है। निक्की बाली रिसोर्ट में ऊंट की सवारी की, जो रेत के ऊपर और पानी के ऊपर भी काफी दूरी तक गये। आगे गीजर बीच पर ही पुरा गीगा मन्दिर का रास्ता पानी के ऊपर अनुपम है, यहाँ किसान समुद्री शैवाल उगाते हैं।

बाली संग्रहालय के करीब पैसीफिका का संग्रहालय है, जो अद्भूत है, इसमें कई यूरोपियन कलाकारों का काम है जो बाली से चले गये जैसे पाल गाड़गिन, थिओमेयर ले मेयूर, रुडोल्फ बोनट, हाक्रिक पॉलाइड्स और एमिलियो एम्ब्रोन। सामने बाली कलेक्शन था, जहाँ भारी संख्या में दुकानें और डिपार्टमेन्टल स्टोर, बाली स्मारिका एवं उपहार की खरीददारी स्थल थे। पास में पूजा मंडला की भी सैर की, जो एक सभी धर्मों का सांस्कृतिक परिसर है, विभिन्न धर्मों के पवित्र दिनों के अनुरूप त्यौहार भी यहाँ समय-समय पर होते रहते हैं।

पानी के खेलों का आनन्द लेने का मज़ा वास्तव में नुसादुआ के इस छोर पर था, जहाँ जल आधारित गतिविधियों का एक विशाल चयन था, इसमें जेट-स्कीइंग, पैरासेलिंग और केला नाव की सवारी में तट से दूर तक सफ़र सुहाना था।

आगे पाइरेट बे था, नाम से डरावना दृश्य प्रस्तुत हुआ, पर वास्तव में यह समुद्री डाकू थीम वाला रेस्तराँ था, जिसमें लकड़ी के समुद्री डाकू, जहाज का एक विशाल पैमाने का मॉडल भी था। हम दो तीन साथी लकड़ी के पेड़ के घर में चढ़ गये, समुद्र तट पर ही झोपड़ी के साथ टैंट और बोन्टायर्स मिल गया, और डाकू की पोषाक पहनकर हम खज़ाने की खोज में चल पड़े, पर हकीकत में यह एक नाटक मात्र था।

हम अब थके हुए थे और आगे बालिनी मंडी लुकुर में पहुँचे, यहाँ बालिनी क्रीम स्नान, मालिश और बॉडी स्क्रब के मिश्रण से तरोताज़ा हुए, यहाँ सड़कों पर कई स्वतंत्र स्पा थे जो रिसोर्ट की तुलना में बहुत सस्ते थे। पेटाईमेगिया में मछुआरो की लकड़ी की ग्लास बोट में आसपास के क्षेत्र की सैर की।

हम में से कुछ लोगों को तैरना और गोताखोरी पसन्द नहीं था, होटल में ही समुद्र के दौरे के लिए नामित किए एक गोता स्थल पर ले जाया गया, एक हेलमेट से सब ओर देखने और समुद्र तल पर चलकर सभी सुन्दर जलीय जीवन एवं उत्तम मूंगा को भी देखना संभव हुआ।

यहाँ रात में देवदान शो एक सांस्कृतिक नृत्य प्रदर्शन हुआ जो 90 मिनट तक चला जो विभिन्न प्रकार का संगीत वेशभूषा और परम्पराओं का मिश्रण था।

Uluwatu Temple Area

अब हम बुकिट प्रायद्वीप क्षेत्र में पुरा लुहुर उलुवाटु मन्दिर पर थे, यह व्यापक रूप से अपने चट्टान शीर्ष स्थल के लिए जाना जाता है, जो हिन्द महासागर की लहरों से 250 फीट ऊपर है, पुरातात्विक अवशेष समुद्र और सूर्य के भव्य दृश्य और शान्तिपूर्ण वातावरण मे उदास कह्यांगन के रूप मे रूद्र की अभिव्यक्ति में सांग हयांग विधिवासा को समर्पित है। हर शाम 6 से 7 सूर्यास्त की लुभावनी पृष्ठभूमि में आयोजित होने वाला कलीक नृत्य मनमोहक था। क्षेत्र जंगल की जमीनों से घिरा हुआ है, बहुत से बन्दर थे, जो कई साथियों के टोपी, हेंडबैग एवं मोबाइल तक ले भागे।

यात्रा के छठे दिन मार्गदर्शक एलिना ने हमें बताया कि हमें जिम्बरन, लेजियन, सेमिनयक एवं कांगू होते हुए तनहा लोट मन्दिर तक लेकर जायेंगे। जिम्बरन के केन्द्र में गरूड़ विष्णु के चित्र एवं सांस्कृतिक पार्क में विष्णु की

Dreamland Beach

एक बड़ी मूर्ति थी जो एक महत्त्वपूर्ण हिन्दू देवता और पौराणिक इण्डोनेशियाई गेरुआ पक्षी गरुड़ था, यहाँ कई सांस्कृतिक कार्यक्रम, पूरे वर्ष भर संगीत समारोह और अन्य कला संबंधी कार्यक्रम भी होते रहते हैं। पास में ही सुलावन बीच था, जो समुद्र तट सुरम्य चूना पत्थर रॉक संरचनाओं द्वारा घिरा हुआ था, जिससे ब्लू प्वाइंट यहाँ फिरोज़ा पानी की बदोलत था, बांलनगना बीच अपने उन्नत सर्फ़र लहरों के लिए जाना जाता है। पडांग बीच भी सर्फ़र का आनन्द लेने के लिए है। साथ ही पांडवा बीच छिपे हुए समुद्र तट के रूप में चूना पत्थर से घिरा हुआ कुतुह गाँव के करीब है, यहाँ विभिन्न हिन्दू महाभारतकालीन मूर्तियाँ थीं। इसे पाँच पाँडव के नाम से जाना जाता है, यहाँ

स्नोरकेलिंग और पैरासेलिंग जैसी जल क्रीड़ाओं के लिए भी तट मनोरंजन है। जेगली गैलरी, सेरह गारमेंट सुपर-मार्केट, ओपियस ब्यूटी, मोर्निंग मार्केट, केडोंगन मछली बाज़ार, समस्ता लाइफ स्टाइल विलेज एवं लिम्बरन टाउन का भी भ्रमण किया, वारुंग बैगस में भोजन के बाद बिंगिन बीच की पैदल यात्रा के बाद ड्रीमलेण्ड बीच पर पहुँचे, जहाँ रंगीन चट्टानों के बीच चुनौतीपूर्ण तरंगों में उन्नत सफ़र का आनन्द लिया। पास में ही एक चट्टान के ऊपर स्थित रॉक बार था जो हिन्द महासागर के नीचे दिखता है। यहाँ सूर्यास्त के दृश्य का आनन्द लेने के लिए समय पूर्व बुकिंग हुआ करती है, इसलिए हमारे लिए यह आसान उपलब्धि नहीं थी।

अब हम पश्चिमी तट पर लेजियन उपनगरीय समुद्र तट क्षेत्र में थे, जो कुटा के उत्तर में और सेमिनयक के दक्षिण में चौड़ा रेतिला समुद्र तट है। समुद्र तट के समान्तर लम्बी-लम्बी लहरें उठती हुई नजर आईं, यह कम ज्वार का तट है।

आगे सेमिनयक सुन्दर सफ़ेद रेतिला समुद्र तट था। इसका महत्त्व ऊँची लहरों के लिए जाना जाता है, जो सर्फिंग रोमांच के लिए आदर्श है। यह कुटा बीच का विकल्प एवं नाईट लाईफ के लिए सुन्दर, मनोरम एवं सुविधायुक्त है। यहाँ पर आलू हेड बीच क्लब, रिवाल्वर न्यामन गैलेरी, जालान लक्ष्मण, थिएटर आर्ट गैलेरी में वेसांग शो का आनन्द लेते हुए डबल सिक्स बीच पर पहुँचे, इसे ब्लू ओशन बीच भी कहा जाता है। पुरा पेरीटेनगेट 16वीं शताब्दी का समुद्र जादू मन्दिर था एवं पुरा मस्कटी एवं कृषि मन्दिर था, एक जी.बी.टी. नाईट क्लब में ड्रेग कवीन और गो गो, परम्परागत नृत्य देखने के बाद कुदेता पर शाम बिताई।

प्रातः घोड़ों पर सवारी कर केरोबोकन उमाल होकर हम 10 कि.मी. दूरी पर कांगू पहुँचे, यह भोजन, सांस्कृतिक और समुद्र तट की गतिविधियों को अधिक आरामदायक वातावरण प्रस्तुत करता है।

Tanah Lot Temple

आगे हमारा सफ़र तनहा लोट मन्दिर के लिए था, यह सुन्दर समुद्र मन्दिर जो एक चट्टान के शीर्ष पर स्थित है, दूर से ऐसा लगता है, जैसे मन्दिर समुद्र में बह रहा हो, यहाँ सबसे अच्छा सूर्यास्त का वातावरण प्रस्तुत होता है। सफ़ेद रैंड के पवित्र सांय रेस्तरॉ, दुकानों और एक सांस्कृतिक पार्क के साथ मनोरंजक स्थान था, यहाँ नियमित नृत्य प्रदर्शन होते हैं, हिरलूम तीर्थ परेड प्रमुख सांस्कृतिक कार्यक्रम है।

सन्नूर क्षेत्र के होटल को छोड़कर अब हम उबुद्द नगर के क्षेत्र में आरक्षित होटल हेतु निकल पड़े। होटल परिसर पहुँचते ही एलिना ने एक नई मार्गदर्शक का परिचय कराया। अलवीरा रामोस इस उबुद्द क्षेत्र में भ्रमण के लिये पथ प्रदर्शक थी। उसने बताया कि यह उबुद्द जिले का एक नगर एवं बाली द्वीप की सांस्कृतिक राजधानी है, इस नगर का विकास कला और संस्कृति के केन्द्र के रूप में आपको नजर आयेगा, 'यह विश्व के पर्यटकों के आकर्षण का बहुत बड़ा केन्द्र बनकर उभरा है, यह नगर 13 गांवों से घिरा हुआ है और इस नगर को इन गाँवों से अलग करके समझना कठिन है, इस नगर के आसपास का क्षेत्र धान के छोटे छोटे खेतों तथा घने वनों से घिरा हुआ है।' हमने देखा यहाँ पूरे क्षेत्र में रंगीन कला, आकर्षक संग्रहालय और अनुपम मन्दिरों की श्रृंखला थी।

अलवीरा ने बताया कि यह उबुद्द कला बाजार पूरी सदेन अगुंग को अबुद्द रॉयल पैलेस के रूप में जाना जाता

Tirthgangga Water Garden

है फजो शहर के केन्द्र में स्थित था, उसने कहा 'यह 18वीं शताब्दी से इडो तो जोर्का पुतु कंदेल के शासन काल में बनाया हुआ है।' यहाँ के बागों में घूमने की पूरी आज़ादी थी और बाली में अलंकृत वास्तुकला का हमने भरपूर आनन्द लिया। संग्रहालय पुरी लुकोस में कला दीर्घाओं की उच्चतम एकाग्रता नजर आई, यहाँ रुडोल्फ बोनट, वाल्टर जासूस और स्थानीय कलाकार कोकार्डा गेदे, अगुंग सुकावती के दिमाग की कलाकृतियों की पूरी श्रृंखला थी। आगे अल्केमी कैफे में रुक कर हम 'पूरा तमन' सरस्वती मन्दिर गये, जो देवी सरस्वती का छोटा विचित्र मन्दिर कला को समर्पित था, देवी की भव्य नक्काशी और सामने हरेभरे तालाब में कमल के खिले फूल मनोहारी दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। रात को मन्दिर प्रकाशित होकर जादुई रूप से चमकने लगता है।

आगे योगा बार्न, कासा लूना कुकींग सेनिमन का अवलोकन करते हुए वस्त्र कला केन्द्र थ्रेड्स ऑफ़ लाइक चैरिटी पहुँचे, यहां वस्त्र बनाने की प्राकृतिक रंजक का उपयोग बुनाई की कई तकनीक के साथ होता है।

अब हम उत्तर की ओर बढ़े, आगे पेरुसे नेका कला संग्रहालय था, जहाँ आधुनिक और प्राचीन कला के कई पेंटिंग, गहने, मेटल वर्क और वस्त्र की कला संग्रह के भण्डार थे। नदी के पार ब्लौको पुनर्जागरण संग्रहालय था, अलविरा ने कहा यह डबुद में सबसे अधिक पर्यटकों द्वारा पसन्द किया जाने वाला स्थान है, यह डॉन एंटोनियो ब्लौको का पूर्व घर और स्टूडियो है। संग्रहालय एक पहाड़ी पर स्थित था, नदी पार स्वेत एवाय में तापस लॉबस्टर, गुनुंग लेबाह के बाद मन्दिर देखने के बाद 'वाग्यु' का स्वाद लेकर हमने कुछ समय के लिए पेटूलू हेरोन कोलोनी के पास पढ़ाव डाला। वन्यजीव पसन्द करने वाले लोगों के लिए यह स्थल दर्शनीय है।

दूसरे दिन प्रातः ही हम गुनगुन कवी सेबाती मन्दिर पहुँचे, जो पुरातत्त्व एवं प्राचीन वास्तुकला के नमूनों में सर्वश्रेष्ठ है, यहाँ 370 पत्थर-कदम पर चलना रोमांच भरा अनुभव था, आगे प्रसिद्ध तीर्थ एम्पुल सबसे बड़े एक जल मंदिरों में एक अपने पवित्र जल लिए प्रसिद्ध बताया जाता है, जिसका उपयोग शुद्धिकरण अनुष्ठानों के लिए किया जाता है। प्राकृतिक दृश्यों के बीच पहला तालाब सुन्दर दृश्य की तरह नजर आया। मन्दिर के पवित्र जल में अनुष्ठान एवं स्नान के दृश्य भी मनमोहक लगते हैं।

हरी भरी पहाड़ियों को पार कर हम अब तेगलालांग राइस टैरेस पहुँचे, चारों ओर चावल के खेत, गोलाकार में समतल या सबक नामक सिंचाई तकनीक के परिणाम-स्वरूप लहलहा रहे थे। पर्यटकों की भीड़ बहुत ज़्यादा थी, परिदृश्य अद्भूत था। यहाँ पैकूडूई गाँव में चावल की पौध लगाना, काटना भी सीख सकते हैं।

उबुद के आसपास कला बाज़ार, हैण्डीक्रॉफ्ट मेले, पंसार सेरी, पेंगोसेकान, तेगलालांग, पायानगन और पेलीआटा में भी लगते हैं। लेकिन उबुद केन्द्र में लगने वाले

Padang-Padang Beach

बाज़ार की रौनक की थाह पाने के लिए हम कई लोग उतावले हो रहे थे, यहाँ पूरे दिन में कई वस्तुओं की बाज़ारों

की एक श्रृंखला है। इसी स्थान पर एलीज़ाबेथ गिल्बर्ट के जीवन पर आधारित 'ईट, प्रे, लव' फिल्म में अभिनेत्री जूलिया रॉबर्ट्स का अभिनय यहाँ हुआ था। इसके अलावा बाली के उलवाटु मंदिर, पाडांग-पांडाग बीच पर भी दृश्य फिल्माए गए थे। शहर के केन्द्र में सुंदर हरे-भरे स्थान में बॉटेनिकल गार्डन को जर्मनी के पत्रकार स्टीफन रीसनर द्वारा डिज़ाइन किया हुआ बताया गया। यह उद्यान 15 एकड़ में फैला हुआ था। देर शाम हमने उबुद महल के पास बाली का प्रमुख लेगाँन्ग नृत्य प्रदर्शन देखा। अलवीरा ने बताया 'बाली में यह सबसे अच्छे सांस्कृतिक कार्यक्रम में से एक है, जो पूर्वी जावा की एक 12वी सदी की किंवदंती पर आधारित है।' यह एक युवती की कहानी है जिसे अगवा कर और फिर कैद में छिपाकर रखा गया था। कहानी का अधिकांश हिस्सा उसे मुक्त करने की कोशिशों बताने के लिए समर्पित है। अद्भूत नाच और सम्मोहित करने वाले संगीत के साथ यह नृत्य पुरी सरेन पेलियाटन और पुरी दलमपुरी जैसे स्थानों पर भी देखा जा सकता है।

Bali Art Festival

सुबह जल्दी उठकर हम लोग उबुद शहर के बाहर कैम्पुहान रिज़ वॉक के लिए चल पड़े। कुछ लोगों को हमने बिस्तर में ही रहने दिया। हमारी यह पैदल यात्रा गुंनुग लेबाह मंदिर से शुरु होकर भव्य पहाड़ियों के हरे-भरे क्षेत्र से गुज़रती हुई सुनगई नदी और पैयोगन पहाड़ियों के नयनाभिराम दृश्यों तक थी।

हमारा अगला भ्रमण कार्यक्रम आयुंग रिवर रॉफ्टिंग था, आयुंग नदी बाली में सबसे बड़ी नदी है जो बंगली, जियानार एवं बडूंग रीजेन्सी में 75 कि.मी. बहने के बाद सन्नूर बीच पर समुद्र में मिलती है।

नदी के बहाव में रॉफ्टिंग बाली की तीन नदियों में संचालित होता है, आयुंग तेलगावाजा और मेलान्गित। एजेन्ट तीनों की एक साथ बुकिंग पर रियायत का लालच देकर एक बार में ही टिकट दे देते हैं, हमारे साथ भी वही हुआ। प्यांगान से हम केडेवतन तक की 12 कि.मी. की रॉफ्टिंग करने निकल पड़े। केंद्रीय बाली के प्राकृतिक विपुलता के सुनहरे दृश्य एवं रोमांचकारी साहसिक कार्य के लिए परिवार के साथ आयुंग नदी का बहाव क्षेत्र उपयुक्त है।

अब हम डेनपसार से उत्तर के जियानार के कौमेनुह कलाकार गाँव होते हुए तीगनुंगन झरना को देखते हुए काबुपाटेन में तुंकड़ कैम्पुग एवं कास्कैड़ जल प्रपात को निहारने पहुँचे। थोड़ी लम्बी यात्रा करने के बाद अब हम बाली बर्ड पार्क में थे, जिसमें 1000 से अधिक पक्षी थे जो 250 से अधिक प्रजातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कैमेनूह बटरॅफ्लॉई पार्क भी पास में ही था। अब बाली ज़ू के लिए हम सिंगापाडु के लिए रवाना हुए। यह उत्तम देखने जैसा स्थान था, यहाँ अफ्रीकन हाथी व शेर और औरांग उटांग की कलाबाज़ियों पर लोग तालियाँ बजा रहे थे। एक बार फिर लंबे सफर के बाद उबुड़ मन्की फॉरेस्ट पैडान्गटेगल पहुँचे, जो बंदरों के लिए संरक्षण क्षेत्र बना दिया गया है। वास्तव में यहाँ 14वीं शताब्दी के तीन मंदिरों का समूह है, जिसमें लगभग 700 लंबी पूछ वाले यहाँ के आध्यात्मिक बंदर इन मंदिरों की रक्षा करते हैं।

आगे, बाली के सबसे ऊँचे ज्वालामुखी के

Sidemen Village

ढ़लान पर पुरा लुहुर बटुकारु मंदिर था, जो 11वीं शताब्दी के दौरान बनाया गया है और तब्बन के राजाओं के पूर्वजों को समर्पित है। रास्ते में बाली का दूसरा बटॅर फलॉई पार्क तब्बन में था। यहाँ पर कोमोडो ड्रैगन अपना भयानक रूप फैलाए हुए डरावना दृश्य बना रहा था। हरी-भरी चट्टानों और कॉफी के पेड़ों के बीच में पुजूंगान को देखकर, बले मान्ट्रूग झरना और अगसेरी होट स्प्रींग के बाद तमन अयून मंदिर को देखने के लिए हमारा अभियान जारी रहा। थोड़ी लंबी दूरी तय करके अब हम जटीलूवीहराइस टैरेस क्षेत्र में पहुँचे थे। अलवीरा ने बताया 'जटी का अर्थ रियल एवं लूवीह का सर्वोत्तम सुन्दर होता है।' वटुकारु पर्वत श्रृंखला का यह 600 हेक्टर का क्षेत्र चावल के खेतों से लदा एकदम हरा-भरा 'वास्तव में सर्वोत्तम सुंदर' था। क्षेत्र की टोपोग्राफी को 9वीं शताब्दी से परंपरागत सुबह सिंचाई व्यवस्था से एकदम ग्रामीण क्षेत्र में पल्लवित किया हुआ है। इसीलिए इस क्षेत्र को यूनेस्को द्वारा 'वर्ल्ड हेरीटेज सॉइट में समाहित कर लिया है।'

उबुद्व से हरियाली भरे दृश्यों को कुरेदते हुए हम आज पूर्व की ओर पेटानू नदी को पार कर बेटुलु गाँव पहुँचे। यहाँ गोवा गजाह एलीफेंट गुफा बाली द्वीप के शीर्ष आकर्षणों में से एक है। यह 11वीं शताब्दी का बना, गुफा में जाने के लिए सीढ़ियाँ उतरनी पड़ती हैं। यह पूर्ण हिंदू मंदिर एक बड़े मंदिर परिसर से बना एक प्रभावशाली पुरातात्विक आश्चर्य था। अवशेष भरा हुआ आंगन, रॉल वॉल नक्काशी, चित्रों की एक श्रृंखला, बाहर की ओर स्नान मंदिर और शानदार फव्वारों की भरमार थी।

Klung Kung

कलुंग कुंग से बेसाकीह मार्ग पर साइडमैन हरे भरे चावल का क्षेत्र तेलगा वाजा घाटी में एकदम हरीयाली भरा दूर-दूर तक का क्षेत्र, टेन्गानन से कस्तला मार्ग पर हरे भरे वातावरण में मनुष्य विस्मित होकर खो सा जाता है, क्षेत्र में बुनाई प्रसिद्ध है। अब हम दक्षिण की ओर लौटे, यहाँ पेगालीपुरन बाली का प्रमुख परंपरागत गाँव है। शांत पहाड़ों की ताज़ा हवा, एकदम स्वच्छ वातावरण के बीच, अलवीरा ने बताया कि हाल ही में इसे नीदरलैंड के गिए थोर्न और भारत के मावलिननॉंन्ग के साथ दुनिया के सबसे स्वच्छ गाँव में से नामित किया गया है। गालुगन के समय गाँव को पंजोर से पंक्तिबद्ध सजाया जाता है।

अब हम बाली आगा संस्कृति के संरक्षित सबसे एकांत परंपरागत गाँव टेगनान पेगरिंगसन पहुँचे जो मूल परंपराओं, समारोहों और प्राचीन बाली के नियमों, गाँव का

Penjor Decoration

अद्वितीय भूआकार और वास्तुकला के साथ-साथ इसके गमेलन संगीत और डबल इक्कत वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था। जून में मेकरेकरा परंपरा और जुलाई में पेरंग पाडन पत्ती युद्ध का आयोजन होता है। आगे हम कलुग कुंग की राजधानी सेमरापुर पहुँचे। शहर छोटा था, तमन केर्थागोसा, पुपुतान स्मारक, सेमरा जय म्यूज़ियम, कलुग कुंग रॉयल पैलेस, पसार इन्डेक एवं कमासन गाँव देखते हुए जालान राया कैडिदासा मुख्य मार्ग से कैडिदासा के

लिए बढ़े। यहाँ पर पूरा गोवा लवाहा मंदिर, जो बाली के दक्षिण पूर्वी तट पर स्थित है और एक गुफा के चारों ओर बनाया गया है। ड्रैगन के रूपाकतों केन्द्र में मंदिर और प्रवेश द्वार पर बड़े बरगद के पेड़ बहुत सुंदर थे। मंदिर से क्षितिज पर नुसा पेनिड़ा का सुन्दर तट बड़ा ही मनोहर नज़र आ रहा था। समुद्र तट के समानांतर मुख्य सड़क पर आलीशान होटल बाज़ार एवं एक सुंदर समुद्र का किनारा शहर था। कैडिद्दासा की अधिकांश संरचना सड़कें पश्चिम में जियानार या डेनपसार की ओर बढ़ती हुई है। पास में ही कोट्स लैगून एवं पसीर पुतीह बीच, गुनगम हिल्स एवं तमन अजूँग वॉटर पैलेस देखने के बाद तमन तीर्थ गंगा वॉटर गार्डन पहुँचे। प्राकृतिक छटा के बीच में जल में मूर्तियाँ और पथ अलौकिक नज़र आ रहा था।

अब, आगे हमारी अग्नि परीक्षा होनी थी, आयुंग रिवर रॉफ्टिंग हम कर चुके थे, लेकिन तेलगावाजा नद्दी करंगासेन में बर्षाती वन चावल के खेतों और भृगु चट्टानों

Telaga Waja River Rafting

के बीच तेज़ बहाव में होती है। यहाँ रॉफ्टिंग करना ज़्यादा ज़ोख़िम भरा था, बहाव मार्ग घुमावदार पहाड़ियों के बीच था। एक जगह बड़े जल प्रपात के ऊपर से गिरने वाले जल से नाव और नाविक एकाकार हो गए, आगे ये बहाव ही एक प्रपात के रूप में 15 मीटर नीचे गिरता था, उसमें नाव पूरी तरह उलट गई। सवार डुबकियाँ लगाते हुए फिर से नाव में सवार हुए, मानो मौत बहुत नज़दीक आकर लौट गई हो। साथ में दो गाइड थे, उन्होंने हँसते हुए कहा 'इस प्रकार के ज़ोख़िम भरे कारनामे हमारा रोज़ का काम है।' गनीमत थी कि किसी की हड्डी नहीं टूटी, लेकिन यह काफी खतरेदार था।

करांगसेन रीजेन्सी की राजधानी अमलापुरा भी छोटा शहर है। उजुंग वॉटर पैलेस जिसे गिली बाले भी कहा जाता है, जो नेदरलैण्ड के वास्तुकला ने आकार दिया है।

Besakih Temple & Mount Ayung

अब हम माउन्ट लेम्पयुंग के ढ़लान पर पेनातरन पर थे, आयुंग लेम्पयांग मंदिर से हैवन गेट से उत्तम परिदृश्य प्रस्तुत करता है। आगे, बाली का प्रसिद्ध पवित्र मंदिर

Lemph Uyang Temple

बेसाकीह था, जिसे 'मदॅर टेम्पॅल ऑफ बाली' कहा जाता है। यहाँ तीन मुख्य मंदिर हैं, जो हिंदू मान्यता के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु और शिव को समर्पित हैं। यह 1343 में सम्राट

मलापहित ने बनवाया था। 1963 में आगुंग विस्फोट में यह क्षतिग्रस्त हुआ था, माउन्ट आगुंग का लावा परिसर सभी ओर बहा था, लेकिन पवित्र स्थल से एक ओर मुड़कर बह रहा था।

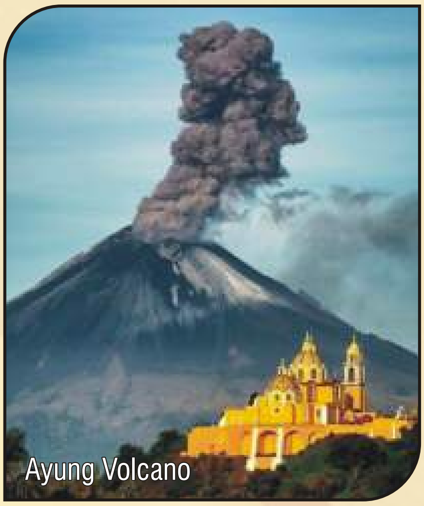

Ayung Volcano

माउन्ट आगुंग बाली का उच्चतम शिखर स्थल है और यह सक्रिय ज्वालामुखी भी है। 1963-64 के विस्फोट में 30 किमी. की त्रिज्या में चारों ओर अफरा-तफरी मच गई थी और लगभग 1500 लोग मारे गए थे।

माउन्ट बन्टूर के क्षेत्र में पेनेलोकन गाँव होकर, हम उबुद से 40 कि.मी. की दूरी पर किंतमनी पहुँचे। यहीं पर अलवीरा ने हमसे विदा ली और पर्वतारोहण में माहिर गाईड उल्वा इस क्षेत्र में हमारी मार्ग दर्शिता थीं। माउन्ट बटूर पर सूर्योदय देखने के लिए इस रॉक स्थल पर हम शाम से डेरा डाले हुए थे।

Batur Lake Area

उल्वा ने हमें रात के दो बजे उठा दिया और एक अच्छी समन्वित यात्रा, अद्भूत ट्रैकिंग का आनंद लेते हुए सूर्योदय स्थल पर पहुँचे। मौसम ठंडा और मनभावन था, पहाड़ पर चढ़ना चुनौतीपूर्ण था, फिर भी इस ट्रेकिंग कार्यक्रम में उल्वा ने हमें मंत्र-मुग्ध कर दिया। उसने कहा 'अभी अंधेरा दूर हो जाएगा, गहरे रंग का काल्डेरा क्षेत्र हल्के हरे से सूर्य की किरणों से जगमगा उठेगा।' और एक अद्भूत सूर्योदय हमने देखा। अब हम नीचे उतरने लगे थे उत्तर पूर्व में प्रकृति में समाहित यह क्षेत्र कालातीत सुंदरता का प्रतीक था। सभी छः प्राचीन गाँव झील के चारों ओर थे। स्थानीय लोग अपनी पैतृक परंपराओं का पालन करते है। यह हाईलैण्ड क्षेत्र समुद्र तल से 400 मीटर ऊँचा है। दिन में ठण्डी हवा और रातें यहाँ ठण्डी होती हैं। यहाँ से माउन्ट बटूर के शानदार दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं। सड़क के किनारे काले पिघले हुए चट्टानों की बीहड़ नजर आ रहे थे। हरी-भरी वनस्पतियों से घिरी नीली हरे रंग की झील बटूर ज्वालामुखी के दक्षिण पूर्व की ओर है। निकट में ही मा आबांग का पश्चिम टूनियन गाँव है, जिसमें खुले कब्रिस्तान की प्राचीन परंपरा बताई गई।

आगे, जेमेलूक खाड़ी क्षेत्र एवं जेमेलूक व्यू पोइंट था। समुद्र का दृश्य यहाँ से मनमोहक था। तुलामबेन के पास

Amed Beach

अमेड़ से 30 किमी. की दूरी पर समुद्र में 1942 में जापानी पनडुब्बी द्वारा एक अमेरिकी सेना में मुक्त 'लिबर्टी' के मलबे के बाद यह डूबा हुआ जहाज़ बाली पर सबसे लोकप्रिय गोता साइटों में एक है, जो तट से दूर है। प्रत्येक दिन 100 से अधिक गोताखोर यहाँ पर उतरते हैं।

अमूक की खाड़ी में ओडेसी सबमरीन सफारी द्वारा रंगीन मछलियों का जमावड़ा देखना अविस्मरणीय था।

बंदूर झील के पश्चिम किनारे टोया बुंगकोह से आगे तिन्धार, कॉन्टोर परबेकेल जैसे स्थानों को पार कर आगे हम जी. राया सिंहराज-अमलापुर रोड के लिए निकले। सुन्गेई-केरिंग नदी के समानांतर बाटू रिन्गीट, साम्बीरेन्टेन्ग, पेनूकटूकन जैसे स्थान आते रहे, तब कहीं देसा तेजाकुला से आगे यह राजमार्ग मिला।

आगे लेस वॉटर फॉल, येह मेमपेह, सूर्या इण्डिगो, आर्ट .जू., एयर सानीह जैसे नहर युक्त, साफ पानी वाले प्राकृतिक वनों के बीच में जलाशयों के बाद समुद्रतट रेखा के समानांतर सड़क पर ही 15वीं शताब्दी का बेजी मंदिर जो वास्तुकला से बेजोड़ कलात्मक नक्काशियों से ओत-प्रोत एवं आगे उत्तर छोर पर मेडूवे कैरांग मंदिर ऐतिहासिक वास्तुकला एवं स्थापत्य कला का अद्भूत नमूना, पत्थर पर कार्विंग से साइकिल पर सवारी करता हुआ, फूलों के बीच में अनुपम चित्रकारी हेतु पत्थरों को अद्भूत तरीके से तराशा हुआ है, उसे निहारते हुए आगे डॅच-वास्तुकला पर आधारित वेलस्कूलप्टूरव मंदिर को देखकर कुबुताम-बाहन होते हुए बारहवें दिन बाली की पूर्व राजधानी शहर सिंहराज पहुँचे। यह उत्तरी बाली का सबसे बड़ा शहर एवं डॅच औपवनिवेशिक कोलोजीयन प्रशासन की राजधानी ही नहीं वरन पूरे लघुतर सुण्डा द्वीप समूह का 1847 से 1953 तक राजधानी रहा है, दक्षिण में बुकीट प्रायःद्वीप क्षेत्र के विकास तक अधिकांश आगन्तुकों के लिए आगमन का बन्दरगाह भी एवं द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानियों के लिए एक प्रशासनिक केंद्र भी था। यहाँ बुँलेलेन्ग रीजेन्सी क्षेत्र एवं शेष यात्रा की मार्गदर्शिका देज़ा किर्कवुड थी। शहर में आज भी डॅच वास्तुकला का प्रभाव देखा जा सकता है, जो मिश्रित बाली, चीन और अरब वास्तुकला का मिश्रण है। डिपोनेगोरो स्ट्रीट एवं नगर बाज़ार में उक्त कला को हम थोड़ी देर निहारते रहे। लिन गलन काइजू चीनी मंदिर, संग्रहालय गेढ़ोंग किरीटा जो प्राचीन बाली की पाडुलिपियों का संग्रह है जो लोनार पत्तियों पर लिखे हुए हैं। शहर में शेर जैसी आकृति, यह टंगु सिंगा अम्बारा राजा की मूर्ति थी जो 1660 के आसपास हुए थे।

देज़ा ने हमें बताया, 'सिंहराज एवं लोविना बीच क्षेत्र यहाँ से 5 से 15 कि.मी. की तटीय पट्टी के बीच छिपा कुदरती खज़ाना, स्कूबा डॉइव एवं डॉल्फीन के साथ अठखेलियाँ करने के लिए अद्भूत मज़ेदार एवं विभिन्न झरनों एवं उच्च भूमि के विभिन्न नज़ारों के लिए क्षेत्र आनंददायक एवं मनोरंजक है।'

प्रातः ही हम गिली मानूक के लिए रवाना हो गए, यह जावा द्वीप से 3 कि.मी. की दूरी पर फैरी सेवा का डॉक था। यहाँ से जावा भूमि का धुँधला दृश्य दिखाई दे रहा था। अब हमें पूर्व की ओर वेस्ट बाली नेशनॅल पार्क, जो एक राष्ट्रीय पार्क है लगभग 190 वर्ग कि.मी. में फैला हुआ, जिस में 158 वर्ग कि.मी. भूमि और शेषसमुद्र है, लाबूहान लालान पोर्ट से नाव द्वारा हम मेन्जांगन द्वीप पर पहुँचे। यह 38 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में है। यह स्नोर्केलिंग और गोताखोरी के लिए आदर्श स्थल है। यहाँ प्रवाल प्रजातियों में मशरूम की 22 प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

पेमूटारन बीच पर देज़ा ने बताया कि यहाँ कैरग लेस्तरी फाउंडेशन द्वारा विभिन्न प्रकार के कोरल को पुनः स्थापित हेतु बॉयोरॉक का विशेष कार्य किया जा रहा है। यहाँ मनाया जाने वाला वार्षिक उत्सव भी देखने योग्य होता है।

समुद्र के एकदम किनारे 16वीं शताब्दी का पुलाकी मंदिर रॉकी हिलटॉप पर काले पत्थरों से बना हुआ है। सेस बॉयोरॉक कोरल गार्डन के बाद टेबल स्टोन पहाड़ी हरे-भरे क्षेत्र में ट्रैकिंग का उत्तम आनंद लिया जा सका। यहाँ गोताखोरी एवं स्नोर्केलिंग का अलग ही मज़ा था। 'पेमीगन' में अंडर वॉटर टेम्पल निःसंदेह सबसे अनूठा अनुभव रहा। बॉयोरॉक क्षेत्र में सुंदर मूगों के बीच पानी के नीचे बनी मूर्तियाँ विशेष आकर्षण था।

लोविना से दक्षिण की ओर आधा घण्टा के बाद हरे पहाड़ों पर कन्टूर के आकार के चावल के खेत का बुजुंगबिया राइस टेरेस घाटी में था। चारों ओर प्राकृतिक हरियाली का परिदृश्य, किनारे पर पॉल्म के वृक्षों की कतारों से मनमोहक दृश्य था, और इतनी ही दूरी पर बान्यूपोह में हरी पहाड़ियों के बीच 'केरता क्वांट मंदिर' वास्तुकला का अनुपम नमूना था। वापसी में 'कली बुक बुक' बुद्ध मंदिर और पुरातमन सरी हिन्दू मंदिर देखने के बाद सेरीरीट मार्केट का अवलोकन किया।

सिंहराज से पश्चिम 5 कि.मी. की दूरी पर लोविना बीच पर सनराइज़ और सॅनसेट दोनों का दृश्य देखने के

लिए मनमोहक स्थल है। गहरी भूरी और काली रेत का समुद्र के किनारे लहरों पर डॉल्फिन मछलियों के साथ अठखेलियाँ करने का मनोरंजक स्थल अद्भूत है। समुद्र के किनारे से समानांतर पर्वत माला, हरे-भरे चावल के खेतों का दृश्य ब्रह्म विहार और मौनिस्ट्री पर्वतों के बीच में अनुपम दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

बुलेलेंग रीजेन्सी के प्राकृतिक भूपृष्ठ एवं तटीय क्षेत्र के नगर सिंहराज से हम चौदहवें दिन विदा हुए। अब उत्तर से दक्षिण की ओर रास्ते में सेंकुपुल झरना एकान्त एवं हरे-भरे क्षेत्र में अविश्वसनीय दृश्य प्रस्तुत कर रहा था। आगे की घनी झाड़ियों से निपटते हुए चुनौतीपूर्ण राह से गुज़रते हुए, कुदरती छटा से ओत-प्रोत गीट गीट एवं बनीयूमाला अमेर्यो जलप्रपात पहुँचे। पर्वतीय दृश्यों से पार कर आगे मुंडूक जल प्रपात देखने के बाद हरे-भरे क्षेत्र वानागिरी हिंडन हिल्स पहुँचे। पूरा जंगल क्षेत्र था, पक्षियों का कलरव वातावरण को गुंजनमय बना रहा था। आगे टिविकल ट्रेकिंग पोइंट था, जिस में बुयन एवं टेम्बलीगन दोनों झीलों को एक साथ देखने में आया। प्राकृतिक हरे-भरे पहाड़ों के बीच दोनों झीलों की घाटियाँ फूलों एवं झाड़ियों से सजी हुई थी।

माउन्ट लेसूंग के उत्तरी ढ़लान से हम टैम्बलीगन झील किनारे पहुँच कर पेराहू द्वारा पतवार के सहारे मुक्त भ्रमण किया। आगे के भ्रमण में हम टी.वी.एस. के द्वारा पुनकेकदानू, मेरबूक पर्वत क्षेत्र से होते हुए मेलान्टिंग जलप्रपात के घने जंगल में भी पहुँच गए।

'हन्डारा आइकोनिक गेट' वास्तव में गौल्फ मैदान बाटून्या रिज़ोर्ट का प्रवेश द्वार था, जो परंपरागत हिंदू रिवाज़ों के चिन्हों से अलंकृत है और लूस हरे पर्वतों से घिरा हुआ है। टार्ज़न स्विंग, फलॉइंग फोक्स बाली ट्री टोप एडवेंचॅर पार्क वास्तव में वृक्ष से वृक्ष का जाल नज़र आ रहा था। पास ही में रोज़ गार्डन एवं बाली बोटेनिकॅल गार्डन है जो 157 हेक्टर क्षेत्र में फैला हुआ है, वन क्षेत्र का ही भाग नज़र आ रहा था।

यात्रा के पूरे एक पखवाड़े के बाद हमारा आखिरी गन्तव्य स्थल डेनपसार से 48 कि.मी. की दूरी पर उत्तर में व सिंहराज से 20 कि.मी. की दक्षिण दूरी पर बेडुगूल पर्वत

Pura Ulun Danu Beratan Temple

माला के बीच कैडिकुनिंग स्थल पर 'पुरा उलुन दानु बेराटन' मंदिर था। बेराटन झील के किनारे जल निकाय के पास ग्यारह मंज़िला छत वाला यह वास्तव में एक प्रमुख हिंदू शैव शिव मंदिर है जो दानुभटारी देवी का मंदिर है। यह बाली आने वालों में सबसे ज़्यादा दर्शनीय स्थल के रूप में विख्यात है, साथ ही में यह एक सुरम्य स्थल और एक मनोरंजक जगह है। इसकी संरचना के अलावा यहाँ का शांत वातावरण और सकारात्मक तरंगें अपने मन, शरीर और आत्मा को फिर से जीवंत करने के लिए एकदम सही है। बाली के मुख्य त्यौहार 'गलुन्गान' एवं 'कुनीन्गान' जो 'पावूकोन' कैलेण्डर पूर्ण होने पर मनाए जाते हैं एवं पाइओडालान मंदिर की वर्षगांठ समारोह के रूप में मनाने का दृश्य अविस्मणरीय रूप से यादगार बनाए रखने योग्य है।

Kuningan

बेराटन झील क्षेत्र में चारों ओर ऊँचे पहाड़ों के बीच नाँव द्वारा घूमना यात्रा की अतिरंजन पराकाष्ठा के रूप परिकल्पित सादृश्य समवृतिता थी।

**- रमेश एस. गमेती**
सहायक आयुक्त (सेवानिवृत्त)

नाम- अंकित कुमार, पद - निरीक्षक
प्र. मु. अ. का कार्यालय, अहमदाबाद

## 'सरकारी संगठनों में कार्यसंस्कृति एवं उसका महत्व'

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी एवं तत्पश्चात ब्रिटिश संसद के भारत में प्रत्यक्ष शासन के समय सरकारी संगठनों में कार्यसंस्कृति शासक वर्ग के हितों का सम्वर्द्धन करती थी, अर्थात अभिजात्य वर्गीय संस्कृति विद्यमान थी। फलतः भारत एवं भारतीयों के हितों से उसका कोई सरोकार नहीं था।

1947 ई. में भारत, अंग्रेजी दासता से मुक्त हुआ एवं हमारे स्वतंत्रता सैनानियों ने समानता, स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय से युक्त एक ऐसे भारत का सपना साकार करने की दिशा में कार्य किया, जहाँ बिना किसी भेदभाव से भारत के सभी नागरिकों को अपने अधिकारों की प्राप्ति संभव हो। उन्होंने भारत को एक आधुनिक, विकसित एवं सामाजिक न्याय से युक्त ~~सामाजिक~~ समाजवादी समाज ~~का~~ बनाने का लक्ष्य रखा। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु नौकरशाही व्यवस्था का निर्माण किया ताकि उसके सहयोग से भारत के लोककल्याणकारी राज्य बनाने का उद्देश्य फलीभूत हो सके। आजादी से लेकर

वर्तमान तक गौर करें तो निश्चित रूप से हमने अपने विभिन्न प्रयासों से इस दिशा में अनेक सफलताएँ हासिल की हैं, जो विभिन्न कारकों का संयुक्त परिणाम हैं जिसमें एक महत्वपूर्ण कारक है- सरकारी दफ्तरों की बदलती कार्यसंस्कृति।

आजादी से समय से 1991 तक भारत में राष्ट्रीयकरण की प्रवृत्ति रही और लगभग सभी क्षेत्र सरकार के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अधीन थे। सरकारी संगठनों की कार्यसंस्कृति पर भी अभिजात्य प्रभाव विद्यमान था जोकि आधुनिक एवं विकसित भारत की दिशा में कमोबेश बाधक रहा। 1991 के बाद भारत ने उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण को अपनाया। तत्पश्चात् धीरे-धीरे सरकारी संगठनों की कार्यसंस्कृति में सुधार हेतु विभिन्न प्रयास किये गये- जैसे-

→ सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005
→ कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013
→ सिटिजन चॉर्टर
→ CPGRAMS
→ आचरण संहिता
→ ई- ऑफिस
→ ई- सेवाएँ

उपर्युक्त प्रयासों के परिणामस्वरूप शासन एवं प्रशासन में शुचिता सुनिश्चित हुई है, पारदर्शिता, जवाबदेही, नैतिकता को बढ़ावा एवं समयबद्धता सुनिश्चित हुई है। सरकारी संगठनों में कार्य संस्कृति में समावेशिता सुनिश्चित हुई है।

लेकिन अभी भी हम अपेक्षित लक्ष्य से दूर हैं, हमें आवश्यकता है कि कार्यालयी कार्यों को पूर्ण समर्पण, सेवा भाव, निष्ठा, नैतिकता, संवेदनशीलता एवं निष्काम भाव से संचालित करने चाहिए ताकि भारत का प्रत्येक नागरिक सशक्त हो सकें एवं लोक कल्याणकारी राज्य का ~~स्व~~ सपना सार्थक हो सके।

**राजभाषा नियम 10: हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-**

- (1) (क) यदि किसी कर्मचारी ने-
- (i) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या
- (ii) केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीक्षा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
- (iii) केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
- (ख) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है;
- तो उसके बारे में यह समझ जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

नाम- अंकित कुमार, पद - निरीक्षक,
प्र. मु. अ. का कार्यालय - अहमदाबाद

## स्वच्छता एवं उसके आयाम

स्वच्छता का महत्व, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के इस कथन से रेखांकित होता है कि "स्वच्छता स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है"

स्वच्छता हेतु हमारे देश में विभिन्न स्तरों पर प्रयास लगातार होते रहे हैं लेकिन बृहद स्तर पर प्रयास 2 अक्टूबर 2014 को दिखाई दिया, जब स्वच्छ भारत मिशन कार्यक्रम की शुरुआत हुई। यह इस संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है कि इसको एक जन-आंदोलन बनाने का प्रयास किया गया ताकि प्रत्येक व्यक्ति स्वच्छता के प्रति जागरूक हो।

आज हम स्वच्छता के विभिन्न आयामों पर चर्चा करेंगे -

→ स्वच्छता एवं संचारी रोग - संचारी रोग अर्थात डायरिया, मलेरिया, डेंगू, टायफाइड आदि का स्वच्छता से सीधा संबंध है। यदि हम अपने आस-पास स्वच्छता का ध्यान रखें तो इन रोगों से बचा जा सकता है जिससे व्यक्तिगत संसाधन एवं सार्वजनिक संसाधन दोनों की बचत संभव होगी।

→ स्वच्छता एवं पर्यावरण - पर्यावरण मानव अस्तित्व हेतु अवश्यंभावी है। हम प्रतिदिन ना जाने कितना कचरा यूं ही फेंक देते हैं जिसका ना तो पूर्णतः उपचार हो पाता है और ना ही वो बायोडिग्रेडेबल है जोकि जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा आदि प्रदूषण एवं प्लास्टिक प्रदूषण को जन्म देता है। यदि हम स्वच्छता पर ध्यान दें तो इन प्रदूषणों से बचा जा सकता है जोकि मानव अस्तित्व के समक्ष खतरा उत्पन्न करते हैं।

→ शहरी बाढ़ एवं स्वच्छता - वर्षा ऋतु में शहरों में आने वाली बाढ़ का एक महत्वपूर्ण कारक सीवर, ड्रेनेज सिस्टम का जाम होना है एवं इस जाम का एक कारक नॉन-बायोडिग्रेडेबल वस्तुओं का सीवर लाइन में जमा हो जाना है। अतः यदि हम स्वच्छता पर ध्यान दें तो बाढ़ की विभिषिका से बचने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास साबित होगा।

→ जलीय पारिस्थितिकी तंत्र एवं स्वच्छता - नदियों, नहरों, तालाबों एवं समुद्रों में कचरे की मात्रा दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिससे वहां के जीवधारी नकारात्मक रूप से प्रभावित हो रहे हैं।

जिसका सीधा असर जलीय पारिस्थितिकी तंत्रों पर पड़ रहा है। यदि हम इनमें जाने वाले कूड़ा करकट को रोक लें तो इन पारिस्थितिकी तंत्रों में संतुलन बना रहेगा।

→ कोविड-19 एवं स्वच्छता → वर्तमान कोरोना वायरस जनित कोविड-19 बिमारी के चलते लगभग सभी लोग मॉस्क का प्रयोग कर रहे हैं, पी.पी.ई. किट, ग्लव्स, होम आइसोलेशन में प्रयुक्त सामग्री आदि का यदि सही से निपटान ना किया गया तो इससे मानवस्वास्थ्य को कई खतरे पैदा हो सकते हैं जैसे- एंटी माइक्रोबियल रेजिस्टेंस आदि। अतः यहाँ भी स्वच्छता का विशेष महत्व है।

→ अर्थव्यवस्था एवं स्वच्छता- यदि हम स्वच्छता पर ध्यान रखेंगे तो विभिन्न रोगों से बचाव, पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण, शहरी बाढ़ आदि से बचाव कर सकते हैं जिससे हमारे संसाधनों की बचत होगी जिन्हें हम दूसरे महत्वपूर्ण कार्यों में उपयोग कर सकते हैं

→ स्वच्छ भारत मिशन एवं समावेशिता → पहले स्वच्छता का कार्य कुछ निश्चित जाति समुदायों को सौंपा ~~जाता~~ गया था लेकिन वर्तमान में यह कार्य

प्रत्येक समुदाय का व्यक्ति कर रहा है। अर्थात इसने स्वच्छता के कार्य को समावेशी बनाया है। अर्थात जाति आधारित निश्चित प्रतिबंधित पेशा को कमजोर किया है।

निश्चित रूप से हम कह सकते हैं कि स्वच्छता हमारे लिए बहुआयामी प्रभाव रखती है। स्वच्छता पर्यटन एवं हमारी अन्तर्राष्ट्रीय छवि को भी प्रभावित करती है। अतः हमें स्वच्छता के प्रति ईमानदारी से व्यक्तिगत, सामूहिक एवं सामुदायिक स्तर पर निरन्तर प्रयास करते रहना होगा।

### राजभाषा नियम 9 - हिन्दी में प्रवीणता

यदि किसी कर्मचारी ने-

मेट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

## :: विभाग के प्रतिभाशाली अधिकारी ::

# क्षेत्रीय भाषाओं का हिन्दी शब्द-भंडार पर प्रभाव

**(कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा-II) गुजरात, अहमदाबाद द्वारा दिनांक 03 अगस्त 2022 को नराकास, अहमदाबाद के तत्त्वावधान में आयोजित 'क्षेत्रीय भाषाओं का हिन्दी शब्द भंडार पर प्रभाव' विषय पर निबंध प्रतियोगिता में इस निबंध को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।)**

**प्रस्तावना :**

भारत देश में विभिन्न भाषाएँ एवं बोलियां बोली जाती हैं। एक अनुमान के अनुसार लगभग दस हज़ार से भी ज्यादा मातृ भाषाएँ हैं। यदि क्षेत्रीय भाषाओं की बात की जाये तो हमारे संविधान के अनुसार प्रमुख रूप से 22 क्षेत्रीय भाषाओं को अनुसूचित भाषाओं का दर्जा दिया गया है। ये सभी क्षेत्रीय भाषाएँ किसी न किसी रूप में हिंदी के शब्द भंडार में वृद्धि कर रही हैं।

हिंदी भाषा की प्रमुख विशेषता यह रही है कि ये क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को अपने भीतर समाहित कर लेती है, वह भी अपने मूल स्वरूप में कोई परिवर्तन किये बिना। इसी विशेषता के कारण आज हिंदी न केवल भारत देश में अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक लोकप्रिय भाषा बनकर उभरी है।

**हिंदी की शब्दावली का संक्षिप्त उद्भव :**

हमें यदि हिंदी शब्द भंडार की विविधता, प्रधानता को जानना है तो यह जरूरी हो जाता है कि हम हिंदी भाषा का इतिहास, इसकी उत्पत्ति एवं विकास को समझें। हिंदी का उद्भव संस्कृत से माना जाता है।

हिंदी का संक्षिप्त विकास क्रमशः वैदिक संस्कृत......> लौकिक संस्कृत......> पालि.....> प्राकृत.....> अपभ्रंश.....> शौरसैनी अपभ्रंश।

हिंदी भाषा प्रमुखतः शौरसैनी अपभ्रंश से ही जन्मी है।

शुरुआत में तत्सम शब्द जो कि संस्कृत के शब्द हैं, ज्यों के त्यों हिंदी में आये । जैसे कि सर्प, अग्नि, रात्रि। परंतु समय एवं परिस्थितियों के अनुसार तत्सम शब्दों में परिवर्तन होते गए एवं अपभ्रंश के कारण उनके उच्चारण, बोलने के तरीकों में भी बदलाव आया। कुछ तद्भव शब्द जैसे कि कान्हा, रात, आग, सांप आदि।

किसी भी भाषा के विकास में समाज का अहम योगदान रहता है। जहां तक हिंदी शब्दावली एवं शब्द भंडार की बात है, यह पर्यायवाची, विलोम-शब्द, एकार्थक, अनेकार्थक, समानार्थक, भिन्न रूपी समानार्थक, शब्दों का समूह होता है। समाज का भौगोलिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक परिदृश्य तथा संस्कार भाषा के शब्द भंडार को परिभाषित करता है।

भारत देश में हिंदी शब्द भंडार में वृद्धि लगभग आदिकाल (1000 ई. से 1350 ई.) में प्रारंभ हुई। इस दौर में चंदबरबाई ने पृथ्वीराज रासो लिखी तो अमीर खुसरों ने नज़रान-ए-हिंद। इसी क्रम में भक्ति काल (1350 ई. से 1650 ई.) में मीराबाई ने नरसी जी का मायरा लिखी, कबीरदास जी ने बीजक, ग्रंथावली जैसी रचनाएँ की। इनके अलावा संत रैदास, संत तुकाराम, तुलसीदास, रहीम ने भी भक्तिकाल में अपने अंतर्मन की स्पष्ट एवं सरल अभिव्यक्ति के लिए हिंदी का ही चुनाव किया।

इसके बाद रीतिकाल (1650 ई. से 1850 ई.) एवं आधुनिक काल (1850 ई. से अब तक) में अनेक रचनाकारों एवं कवियों ने हिंदी भाषा का चुनाव कर इसके शब्द भंडार को अधिक धनी एवं प्रधान बनाया। आधुनिक काल में जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत आदि महान हिंदी लेखकों ने हिंदी के विकास में अपना योगदान दिया।

हिंदी भाषा के शब्द भंडार को देखा जाये तो हम पाएंगे कि अधिकांश शब्द क्षेत्रीय भाषाओं से लिए गये हैं और यही विशेषता हिंदी को सबसे अलग बनाती है। हिंदी के विकास के क्रम में अन्य अपभ्रंश भाषाओं का भी जन्म हुआ। जैसे कि पूर्वी हिंदी जिसमें बांग्ला, उड़िया, बिहारी, आसामी भाषाएँ आती है, इसके अलावा पश्चिमी हिंदी जिसमें राजस्थानी, हरियाणवी, ब्रज, अवधी, गुजराती भाषाएँ आती हैं। पहाड़ी जिसमें कुमाऊँनी एवं गढ़वाली भाषा आती है।

समस्त क्षेत्रीय भाषाओं का हिंदी एवं इसके शब्द भंडार पर परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप से प्रभाव दिखाई देता है।

सामान्यतया क्षेत्रीय भाषाओं से लिए गए शब्द देशज कहलाये। कुछ देशज शब्द उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत हैः

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | गाड़ी | 6. | टन-टन |
| 2. | कटोरा | 7. | पों-पों |
| 3. | लोटा | 8. | पानी |
| 4. | माथा | 9. | चिड़िया |
| 5. | पगड़ी | 10. | थप्पड़ |

देशज शब्दों ने हिंदी के शब्दकोश को न केवल बढ़ाया है अपितु भाषा को सरल, स्पष्ट एवं नवीन भी बनाया है। यदि हम अपने परिदृश्य को बढ़ाकर देखें तो हमें ज्ञात होगा कि क्षेत्रीयता की परिभाषा को राजनीतिक सीमा रेखा से नहीं निर्धारित किया जा सकता। एक ओर हिंदी शब्द भंडार में क्षेत्रीय भाषाओं का अहम योगदान है वही दूसरी ओर कालांतर में भारतीय इतिहास में हुए परिवर्तन एवं अन्य राष्ट्रों के साथ संबंध ने भी हिंदी शब्दावली पर प्रभाव डाला है।

भाषा इतिहास से अछूती नहीं रह सकती। इतिहास में परिवर्तन के साथ भाषा के व्याकरण, शब्दावली, वाक्य में भी परिवर्तन आ जाता है। सर्वप्रथम जब मुग़ल भारत में आये तो अपने साथ-साथ उर्दू, तुर्की लेकर आये।

हिंदी शब्द भंडार में तुर्की भाषा से निम्न शब्द लिए गए हैं:

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | कैंची | 4. | बारूद |
| 2. | चाकू | 5. | तोप |
| 3. | चम्मच | 6. | बेगम |

इसी तरह से उर्दू भाषा से अनेक शब्द हिंदी शब्द भंडार में सम्मिलित हुए हैं उनमें से कुछ शब्द निम्न हैं:

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | आईना | 4. | इबादत |
| 2. | आदमी | 5. | आशिक़ी |
| 3. | आग | 6. | अर्ज़ी |

भारतीय समाज के अन्य राष्ट्रों एवं स्थानों से व्यापार, शासन, धर्म या अन्य कारणों से संबंध बने। प्राचीनकाल से ही भारत के अरब देशों, फ़ारस, पुर्तगाल, इंगलैंड तथा फ्रांस से संबंध रहे हैं। इन सभी देशों की भाषाओं से हिंदी ने अपनी विशेषता अनुसार कुछ शब्द ग्रहण किये हैं।

अरबी से हिंदी शब्द भंडार में लिए गए शब्द निम्न हैं:

1. अदालत
2. ईमान
3. इनाम
4. अल्लाह

फ़ारसी भाषा से लिए गए अनेक शब्दों में कुछ शब्द निम्न हैं:

1. टेबल
2. कागज
3. कानून
4. लालटेन
5. दरोगा

पुर्तगाली भाषा से लिए गए कुछ शब्द निम्न हैं:

1. गमला
2. चाबी
3. फीता

इस तरह से हम कह सकते हैं कि हिंदी शब्द भंडार को अच्छे से जानना हो तो क्षेत्रीयता के पैमाने के बजाय वैश्विक परिदृश्य में देखना होगा, केवल तभी स्पष्ट तस्वीर सामने आएगी।

हिंदी भाषा के शब्द भंडार एवं शब्दावली में सभी देशज, विदेशज शब्दों ने अहम योगदान दिया। हिंदी भाषा के महान लेखकों, इतिहासकारों, कवियों, रचनाकारों, साहित्यकारों ने समय-समय पर विभिन्न रचनाएँ कर के हिंदी को अपनी रचनात्मकता का साधन बनाया और अपना योगदान दिया। क्षेत्रीय भाषाओं को अपने अधीन ले लेने की विशेषता ही इसे भिन्न एवं विशिष्ट बनाती है। इसीलिए हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जो भारत देश को एकता के सूत्र में पिरोये रख सकती है।

हिंदी भाषा की विविधता एवं प्रधानता के कारण ही कहा गया है कि हिंदी अ-अनपढ़ से शुरू होती है एवं ज्ञ-ज्ञानी पर समाप्त होती है।

**- दीपक कुमार मीना**
निरीक्षक

# Life A Little Different

Life is fragile, I think as I watch continuous news clips across television about Sridevi's death. It was a little unnerving because everything in life is so unpredictable, so shaky. What we attribute and take for granted for its permanence could be taken away from us in a cruel twist of fate. I remember, hearing it somewhere that we are so content with ourselves, in respect of wealth, social status, even looks but we fail to understand that we are mere specks in the whole universe. We live on a planet that is round in shape, that goes around another heavenly body that emits light and we are a miniscule part of the never ending universe. Thus, we are very tiny and so to say insignificant instruments if we look at it that way, in the order of this universe and its existence.

A little too much philosophy; but all this took me back to the events that occurred in my life almost two years back. A few days before the fateful day, I was happy, and who would not be, it was my maternal grandparents fiftieth wedding anniversary celebrations in Chandigarh.

The thought of one's grandparents evokes warm, fuzzy feelings of our childhood for most of us. I had been the eldest Grandchild in my maternal side so I was the apple of everyone's eyes, the one who was used to being showered with all the attention. My grandparents have been living in Chandigarh; scenic and beautiful to the core, for the past many years and going back meant dipping into all those memories.

So, here I was, fresh out of college, ready to take on life completely uninhibited and unbridled. There is certain idealism, a certain beauty in being a young person and then a young professional; you have a sort of never ending enthusiasm and are yet to be dulled into life's monotony.

I had joined an Advocate's office and was happy to learn the ropes of the profession. I felt a sense of power resonating from the Advocate's robe, which if used properly and for benefitting society, nothing could be as powerful. Surely, there were bad days too, the Advocate known, and not too senior was a little too easy to displease but in his defense, I was way too inexperienced. So I took it all in my stride, realizing that most senior Advocates had a propensity to snap easily, it is more like a professional hazard. And in the end I was working towards being able to do my work efficiently and to maybe one day being able to present a case before the judge on my own steam.

So, all in all, if someone as a spectator looked at my life, they would see that it was as normal as many others, with youth and time ahead of me.

Again going back to the wedding anniversary celebration; my parents, my younger brother and I went to Chandigarh and had an amazing time mingling with relatives and regaling in laughter, mirth and togetherness.

The celebration party and dinner went smoothly and on 24th April, 2016 we all

packed our bags and were ready to depart for our train journey from Chandigarh to Ahmedabad. Trains are majestic, I have believed, they have an old world charm about them in the world of faster mobility modes available, these elephantine modes of rail transport have been able to retain their takers. Like most urban Indian middle class families, I along with my family had travelled a lot in trains especially in the 90's. The trains chugged along, sometimes on smooth, sometimes on rugged train, making stops in between and letting the person sitting inside, feasting on all the fleeting sceneries, visiting small towns, tiny villages, and big inviting cities all at once. Now coming back to that particularly memorable day, tired from the celebrations of the last night, I immediately dozed off on my seat. When I got up, we had reached Delhi and there was a twenty minute stop at the first stop. Then came the second stop, by then my parents had also woken up. It must have been 10:15 in the morning and my father and I thought we would get down and buy some cold drinks and chips. We purchased these from the shop of a nearby vendor on the platform, by then the train had started moving slowly. So, we both immediately rushed to board it. I had the packet of chips as well as a bottle of cold drink in my one hand, thus catching the train seemed a little difficult. My father, thought I would not be able to board the train, he came towards me and tried helping, and in all the confusion, and with fear mingled with unwillingness, I held on to the bars of the gate of the train with my father holding me from behind.

First he asked me to try and step on board, but as soon as he realized that the train had picked up speed, he told me repeatedly to leave the bars of the gate. I was gauging everything, and I looked down, and I could see the swiftly moving tyres and I thought leaving the bars would mean falling under the train. There is something about a human and them seeing an eminent painful end, they use all their might in their frail, prone to mortality self to fight against a horrific end.

The holding of the bars was the biggest mistake. As the train picked up speed, it was humanly impossible to match that speed and force. It was not even a second before I lost grip and was hurtled under the moving train. As luck would have it, I fell on the side of the tracks, with only the left heel lying on the track. In an unfortunate turn of events, I looked up to see if the train would hit my head and exactly at the same time, the train metal parts had mercilessly started cutting open my fragile left heel. It felt like being cut open by a knife working mercilessly, repeatedly to make sure that it all turned into a red, pulpy and extremely distorted mess.

I soon realized that not taking away my foot away from the track at the right time when this stopped would mean the foot would then be immediately be run over by tyres and that would definitely meaning losing the limb altogether. So, within a second of all this occurring, I had to take my foot away from the track at the right time, so as to shield my foot from further injury.

It was dark under the train, and the adrenaline flow with the turn of events was too much for me to realize that what had just happened, I just felt too lucky to be alive.

The train stopped suddenly and miraculously as someone had pulled the chain from inside. My father who had lost balance and had tripped and rolled over on the platform was horrified at what had just happened. For that moment, as he saw my body go under the train, he feared the very worst.

The railway guards came over and helped me to crawl out from under the train. In fact not realizing the extent of my injuries, I put my left foot also down but the bare mutilated heel could not bear to be put on the gravel and rocks near the tracks. I could not see the backside but I felt weak and would have collapsed had it not been for the railway guards who picked me up and carried me to a bench on the platform.

From the 24th of April, 2016 to almost 4th of May, 2016 was a nightmarish period for me and for all of us as a family. The extent of injury could not be understood, gauged or fathomed by us as absolute lay persons. My parents were frantic and extremely peturbed. They searched and researched for doctors and surgeons. During that period, my parents consulted a lot of doctors, surgeons and cosmetic surgeons. For some reason they seemed reluctant to take up the surgery, and with the others we were a tad too uncertain. Time seemed to be running out, we were absolutely and painfully aware that some highly trained surgeon had to be consulted so that my heel could be saved. Then on one particular day, we were referred to Dr. Shailendra Singh, a plastic surgeon. He discussed the extent of the injury and the medical treatment that would be required. The heel had suffered a serious crush injury, loss of the upper layer as well as sizeable muscle tissue of the heel had taken place. He advised us to not waste time and referred us to Ganga Medical Centre And Hospitals Private Limited, Coimbatore as advanced microvascular surgery with the help of high end technology microscopes was required. He insisted that he had trained under Dr. Rajasabapathy and that he was the right person, the right surgeon to visit right now. For some reason we reposed absolute trust in Dr. Shailendra Singh and within a day's time my parents and I left for Coimbatore.

I was losing patience somewhere, and getting restless because there was a lot of uncertainty and there was bodily pain, the gnawing and throbbing wound and bandages wrapped around was now making me frantic. For me the injury was almost like a ticking time bomb, parasitical in nature, feeding off my energy and will at all times. I somehow now could understand, when in older times people equated sickness and injury to evil signs, majorly also because of the limited scope of medical sciences in the earlier times. With an injury, that was sucking my blood, making me lose my strength, for certain unsure moments I dreaded that maybe my left foot would need to be amputated.

I had never been to a hospital before except maybe once because of a bout of chicken pox and then also I had not been admitted. I remember in moments of jest, I had even mentioned it to some people. And so life determines to serve you things, you thought you would not ever have to experience or endure.

I had no one on one experience with doctors before. In fact, doctors like lawyers elicit an extreme reaction, with lawyers there is more distrust. Though doctors were always considered as life and health saviors, since time immemorial, but with

commercialization and the cut throat nature of the sector, a level of distrust had built up for this fraternity also in the last few years. So, when I came, I was gauging everything, trying to understand what was to be done, trying to follow all discussions, each word with the doctors feverishly and desperately.

As much as this is about my experience, it is also about the doctors who did my surgery, especially Dr. Rajasabapathy and Dr. Hari Venkataramani and the team of doctors who assisted them through this surgery. I would here like to say that after any accident there are two three issues that lie heavily on a patient's mind. Foremost being, whether there would be any loss of limb, then whether there would be any long term effect on movement, gait, activity and other side effects on health. All these affected me also. Being a young woman, I was also quite worried about the appearance part of it, that there would be any permanent marks or scars was a concern and a fear that loomed large in my mind. I would here like to add that during this whole ordeal and later, I was not able to identify with even one public figure. It is such a pity that in our society we have built heroes out of matinee idols and sports stars whose currency lies in their picture perfect toned bodies, not discounting the work and effort there. But, I realized that we needed more real examples, examples of triumph against strife. That ordinary lives lived a little less ordinarily needed to be told more by media, various outlets and even by people who have undergone such experiences so that at such trying times, they can find solace in knowing there have been others in their situation too.

The surgery was scheduled for sixth of May, 2016. Muscle from my shoulder and skin from the right thigh was taken to cover the muscle and skin defect of the heel. The surgery went off successfully, it was a lengthy, 5-6 hour surgery and for the next almost three weeks, I was confined to the hospital bed. I was able to trust everyone in the hospital, whether it was the doctors or the staff. Everyone helped me to delicately pick up the fragile pieces of my life. I had a new found and very well placed respect for the medical fraternity. I somehow find it so miraculous that such a deep wound could be treated, with the help of this highly specialized surgical procedure called micro vascular free flap surgery. I am still wonder struck that I will be able to live my life normally without being dependent on anyone. Hospitals and being immobile make you grow up beyond your years and you start seeing the world not just for what it is but how and what it can be made a better place.

I would like to tell everyone who reads this piece of mine that they should take hope from this story of mine. I had my share of mood swings, my moods swiftly changed from one end of the pendulum to the other. People around me, especially my parents, my maternal grandparents, my brother and a friend from my college and later a host of visitors who came to look me up, all of them helped me to come to terms with the this life changing experience. Here, I would also like to add that there were people who were maybe not discouraging on the face but who's attitude changed completely after the accident, some relatives and even some friends, who did not understand the gravity of the situation and slowly distanced themselves. Maybe it was just me who was giving this

too much thought. I realized very soon that I had always considered myself an above average looking person and it took me a long time to come around the scars as a result of the accident and subsequent surgery, my self esteem was at an all time low. Some incidents like people giving me quizzical looks because of my changed footwear because of the accident and excess frisking on the airport more than once, though that was completely due to security reasons, to check whether the traveler is not carrying any untoward item. This was a result of the thick black protective covered shoes that I had to wear for almost a year and a half on all occasions also because the size and shape of the left heel was three times of the right heel, something that had to be rectified with a surgery two years hence. It was at this time that I realized that I had always gained my confidence from my exterior like most people and had completely ignored the reservoir that lay within. That I was not just unique because of my physicality but also because I was my own person and there could be no other one like with my own unique set of experiences and path of life. Thus the onus on one's exterior is so reinforced nowadays with us being fed with photo shopped, next to impossible images that we have stopped accepting our own individuality. It was not the same a few years back, an actress like Meena Kumari allegedly had one digit of her hand chopped in an accident in her childhood, and yet she was extremely popular actor celebrated not just for her work but equally for her beauty. These anecdotes and trivia really inspired me, though I would still concur that all of us have to work towards making this society to have more positive, encouraging outlook by promoting and propagating unlikely heroes. But definitely I feel my interaction with various persons on different levels and with different perspectives and different set of attitudes helped me and guided me in turbulent and difficult times.

From my experience as a patient, I have realized that at times there is an all engulfing gratitude for being alive, for being saved from something so massive. There is that feeling of being so very lucky to have been referred to this Hospital and to have received excellent medical care and help at the right time by a dedicated and highly experienced set of specialist doctors. That there are certain safety measures and precautions that I would need to take at all times, but that in no way limits my happiness and abilities. This is something that eludes an average person in India. At the same time, there is sometimes also a completely strange and depressing feeling of being so utterly helpless, that feeling of inner doubts and disturbing thoughts as to why it happened to me and why my life should be effected by it. It is indeed so difficult to come to terms with events like these in your life. But eventually one has to and one ought to make peace with the circumstances and situations of one’s life and its happenings. I have come down to this conclusion eventually after much of pondering that there is a cosmic reason for all the major events happening to you.

I say cosmic because I believe there is a force far greater than me that not only helped that time but also later as I spent sleepless nights, repeating the incident many times in my head and thinking how I could have acted differently and saved myself from all this. With most patients who have undergone such an accident, the first reaction is disbelief and utter shock that they could land themselves into something which they had

just read about in newspapers or heard about someone having undergone something similar and feeling empathetic towards them.

Soon, a very strong belief took over me that there was no other way, but this way. I assure you that to come to this conclusion is not overnight, it takes a lot of time and I am turned this into a positive learning curve but there are many who might get disheartened, disillusioned. It depends on the person's support system but also their own mental strength because that will ultimately see you through the trials. For women especially in Indian society, it is very easy to get disheartened because majority of us have been conditioned to be props, to survive with help of male crutches all our life. It is so deeply entrenched in the mindset that we ourselves do not question it, and though I considered myself a liberal and feminist all my life till then, even I could not but fall into the trap of 'what would the society say'. So, it's better to realize sooner than later that the way you mould, live, conduct yourself is no one's but just your business.

I believed I had to undergo all those experiences, the pain, the healing, the dejections, to become the person I have become. I believe I am a much stronger person today and with time to introspect, I would like to believe also that I have become a much better person too. I can reflect on everything today with grace, and gratitude. There are moments of self doubt also, but I am slowly being able to deal with them and conquer them.

As I grow older, I want to wear my scars proudly as medals for conquering life's battles. I still do not discuss at length, the gravity and extent of the whole incident with everyone because I believe most people would be baffled and skeptical. I feel they would not be able to believe such a turn of events. I have started working again as a Legal Professional in the corporate set up, I am grateful that I got a chance, a very big chance to live that not many people get.

Though I still think that there is a lot that I have to achieve, there are still many untrodden paths that I yet have to navigate, many things that I am yet to see. I have to do something I thoroughly enjoy, that gives me immense gratification and that does not feel like work at all which also gives me a chance to give back to the society, by putting to use all the wisdom and experiences I have accumulated. Through this write up also, I wish that someone, somewhere looks at things differently, sees life for what it is. It is beautiful, that it could serve as an inspiration to someone who is presently dejected at their trajectory of life, that they model parts of their life by learning from my experiences and definitely even making their lives a lot better not just for themselves but also for others.

I believe life is very special and I am special, I believe that there is a bigger purpose and motive for which I have been saved. Life is a precious gift of God and we must remain positive and optimistic come what may.

***- Ms Anmol Kaur Munjal***
*daughter, Smt. Anupama Munjal*
*Assistant Director (OL)*

## आयुक्तालय में हिन्दी की गतिविधियाँ

### वर्ष 2021-2022 हेतु राजभाषा : सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन)
### * मूल रूप से हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहन योजना *

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली के दिनांक 16 फरवरी, 1988 के कार्यालय ज्ञापन संख्या II/12013/3/87 – रा.भा.(क-2) में दिए गए मार्गदर्शी सिद्धांत में उल्लिखित सभी शर्तों के आधार पर एवं संयुक्त निदेशक, भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग, नई दिल्ली द्वारा जारी पत्र फा.सं.ई. II/12016/1/2018-हिन्दी-4-डीओआर दिनांक 17.03.2020 के अनुसरण में मुख्यालय तथा मण्डल कार्यालयों के निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को वर्ष 2021-2022 हेतु सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत उनके सामने दिखाई गई राशि के बराबर नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया तथा प्रशस्ति प्रमाणपत्र प्रदान किए गए :-

| क्र.सं. | अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पदनाम | स्थान | राशि |
|---|---|---|---|
| 01. | श्री प्रदीप, कर सहायक | प्रथम (मु.) | 5000 रुपए |
| 02. | श्री सी. पी. सिंह, अधिशासी सहायक | प्रथम (मु.) | 5000 रुपए |
| 03. | श्री विकास गुप्ता, अधीक्षक | प्रथम (मण्डल) | 5000 रुपए |
| 04. | श्री बलराम मीना, निरीक्षक | प्रथम (मण्डल) | 5000 रुपए |
| 05. | श्री अमित पंड्या, कर सहायक | प्रथम (मण्डल) | 5000 रुपए |
| 06. | श्री यूनुस मीर, कर सहायक | प्रथम (मण्डल) | 5000 रुपए |
| 07. | श्री निकुंज, अधिशासी सहायक | द्वितीय (मु.) | 3000 रुपए |
| 08. | श्री तीर्थ पटेल, कर सहायक | द्वितीय (मु.) | 3000 रुपए |
| 09. | श्री अंकित वनोल, अधिशासी सहायक | द्वितीय (मु.) | 3000 रुपए |
| 10. | श्री विनित कुमार, निरीक्षक | तृतीय (मु.) | 2000 रुपए |

**राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।**

**– महात्मा गांधी**

## केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, अहमदाबाद-दक्षिण
## * हिन्दी दिवस / पखवाड़े का आयोजन - वर्ष 2022 *

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली के दिनांक 21.04.1987 का कार्यालय ज्ञापन संख्या 1/14034/2/87 – राजभाषा (क - 1) के अनुसरण में पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी हिन्दी दिवस 2022 (14 सितंबर) के अवसर पर इस आयुक्तालय में दिनांक 19.09.2022 से 30.09.2022 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

**2. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए :-**

(क) कार्यालय में सारा काम हिन्दी में करने का प्रयास किया गया।

(ख) हिन्दी सप्ताह के दौरान सभी कार्यालयों में हिन्दी के प्रचार संबंधी पताकाएँ, बैनर आदि प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित किए गए।

(ग) इस दौरान दिनांक 20.09.2022 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया तथा 21 से 23.9.2022 तक निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :-

(1) हिन्दी वाचन प्रतियोगिता

(2) हिन्दी विचार विस्तार प्रतियोगिता

(3) हिन्दी कार्यालयीन अनुवाद प्रतियोगिता

**3. उपर्युक्त प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम चार स्थान प्राप्त करने वाले प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ स्थान प्राप्त सफल प्रतियोगियों को क्रमशः रु.2000/-, रु.1500/-, रु.1250/- और रु.1000/- के नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।**

**4. उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में सफल प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं :-**

### * हिन्दी वाचन प्रतियोगिता *

| क्र.सं. | अधिकारी / कर्मचारी का नाम एवं पदनाम<br>सर्वश्री - | स्थान | राशि (रु.) |
|---|---|---|---|
| 01. | विकास कुमार गुप्ता, निरीक्षक, मंडल - III | प्रथम | 2000/- रुपए |
| 02. | श्रीमती सोनू यादव, निरीक्षक, प्र.मु.आ.का. | द्वितीय | 1500/- रुपए |
| 03. | श्रीमती अंजू सिंह अधीक्षक, प्र.मु.आ.का. | तृतीय | 1250/- रुपए |
| 04. | सुश्री प्रिया नांबियार, निरीक्षक, संगठन एवं पद्धति/कैट | प्रेरणा - I | 1000/- रुपए |
| 05. | राजीव कुमार, कर सहायक, मण्डल-I | प्रेरणा - II | 1000/- रुपए |

## * हिन्दी विचार विस्तार प्रतियोगिता *

| क्र.सं. | अधिकारी / कर्मचारी का नाम एवं पदनाम सर्वश्री - | स्थान | राशि (रु.) |
|---|---|---|---|
| 01. | राजीव कुमार, कर सहायक, मण्डल-I | प्रथम | 2000/- रुपए |
| 02. | कुंदन कुमार, निरीक्षक, लैंड एंड बिल्डिंग / मण्डल-II | द्वितीय | 1500/- रुपए |
| 03. | अंकित कुमार, निरीक्षक, प्र.मु.आ.का. | तृतीय | 1250/- रुपए |
| 04. | सुरेन्द्र कुमार पोद्दार, अधिशासी सहायक, मण्डल-V | प्रेरणा | 1000/- रुपए |

## * हिन्दी कार्यालयीन अनुवाद प्रतियोगिता *

| क्र.सं. | अधिकारी / कर्मचारी का नाम एवं पदनाम सर्वश्री - | स्थान | राशि (रु.) |
|---|---|---|---|
| 01. | राजीव कुमार, कर सहायक, मण्डल-I | प्रथम | 2000/- रुपए |
| 02. | तीर्थ पटेल, कर सहायक, राजभाषा एवं न्याय निर्णय | द्वितीय | 1500/- रुपए |
| 03. | अनुपम नकड़ा, कर सहायक, अपील्ज.आयुक्तालय | तृतीय - I | 1250/- रुपए |
| 04. | अंकित कुमार, निरीक्षक, प्र.मु.आ.का. | तृतीय - II | 1250/- रुपए |
| 05. | मनीष कुमार चौधरी, निरीक्षक, प्र.मु.आ.का. | प्रेरणा | 1000/- रुपए |

**भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची भारत की भाषाओं से संबंधित है। इस अनुसूची में 22 भारतीय भाषाओं को शामिल किया गया है। संवैधानिक रूप से भारत की आधिकारिक भाषाएँ इस प्रकार हैं:**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| असमिया | उड़िया | उर्दू | कन्नड़ | कश्मीरी | कोंकणी | गुजराती | डोगरी |
| तमिल | तेलुगू | नेपाली | पंजाबी | बांग्ला | बोड़ो | मणिपुरी | मराठी |
| | मलयालम | मैथिली | संथाली | संस्कृत | सिंधी | हिंदी | |

## * आयुक्तालय में आयोजित हिन्दी पखवाड़े की झलकियां *

*** हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेतागण एवं प्रोत्साहन योजना के तहत चयनित अधिकारीगण प्रधान मुख्य आयुक्त श्री विवेक रंजन, आयुक्त श्री उपेन्द्र सिंह यादव एवं आयुक्तालय के शीर्ष अधिकारियों से प्रशस्ति-पत्र प्राप्त करते हुए ***

*** हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेतागण एवं प्रोत्साहन योजना के तहत चयनित अधिकारीगण प्रधान मुख्य आयुक्त श्री विवेक रंजन, आयुक्त श्री उपेन्द्र सिंह यादव एवं आयुक्तालय के शीर्ष अधिकारियों से प्रशस्ति-पत्र प्राप्त करते हुए ***

# ∗ हिन्दी कार्यशालाएँ ∗

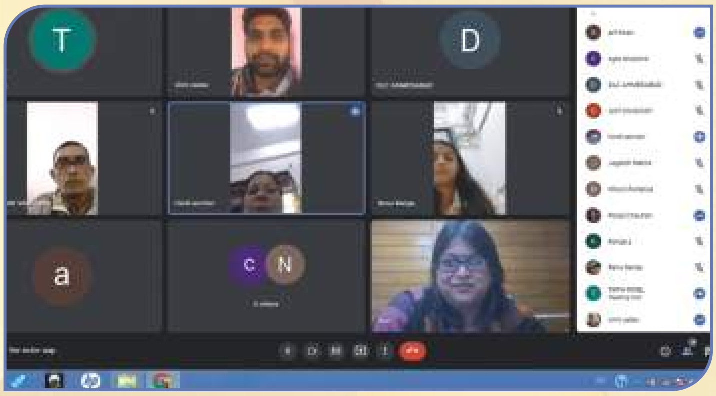

# विभाग के प्रतिभाशाली अधिकारी

श्रीमती नेहा पटेल, अधीक्षक ने आगरा में अखिल भारत नागरिक ( सिविल ) सेवा टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2021-22 में स्वर्ण पदक प्राप्त करके आयुक्तालय को गौरान्वित किया है।

# आयुक्तालय के उभरते चित्रकार

**- शशिकांत स्वामी**
निरीक्षक

# बाल चित्रकार

- बेबी सौम्या
अनूप कुमार गुप्ता,
आशुलिपिक की भांजी

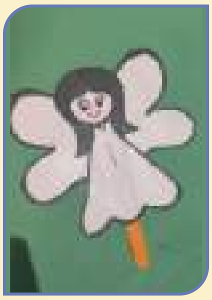

## सतर्कता दिवस-2022 तथा स्वच्छता पखवाड़ा-2022 चित्रों की जुबानी

# आयुक्तालय के उभरते चित्रकार

**मानसी खिंवसरा**
आशुलिपिक

**केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, अहमदाबाद दक्षिण**

केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर भवन, राजस्व मार्ग, आंबावाड़ी, अहमदाबाद-380015 (गुजरात)